मसलक-ऐ सूफिया
और
ताज़िया शरिफ

अहले हक की तीन पहचान-

"नबी का आशिक,
ताजियादारी और
समां पे रखता हो ईमान"

बहक मोअल्लिफ महफुज

किताब का नाम : मसलके सूफिया और ताजियाशरिफ

मोअल्लिफ– सूफी सईद मजहर अशरफी चिश्ती कादरी, साबरी

मूल्य : अपनी बिसात के मुताबिक बारगाहे हुसैन अलैहीस्सलाम मे नजर करें और मोअल्लिफ के हक में दूआ करें।

ऊर्दू से हिन्दी में अनुवादक – मो. सोहैल अशरफी

अकिदत – डॉ. मो. अनवारूल हक अशरफी

शाह फसाअत का मैदान, पटना सिटी

मिलने का पता :

सैयद साबिर अली चिश्ति टाटा हाउस, मुतससील इमामबारा, अजमेरशरीफ

खानकाहे मुजतबाइया अशरफिया, शम्भूपट्टी,

डाकखाना–बोअरिया, जिला–वैशाली, बिहार (भारत)

विषय-सूची

(फेहरिस्त मजामीन)

पेश लफज (भूमिका)

"मसलके सूफिया और ताजिया शरीफ" किताब वक्त (समय) और हालात को देखते हुए अपने असलाफ और बुर्जुगों के अकिदे और मसरब को जाहीर करने के लिए तसनिफ की गयी है ताकि अहले अकिदत हजरात को मुसतकबिल (भविष्य) में एक मजबूत सनद (प्रमाण) मिल जाए। माजी (भूत) और (वर्तमान) में चन्द कठमुल्लाओं और भाजपाइयों मौलवियों ने मुहर्रमूल हराम का महीना आते ही जुमा के दिन मेम्बर मस्जिद से तो कभी जलसे व जुलूस से खताब करते हैं के ये ताजिया बनाना हराम है हराम है, हराम है और ताजियादार जहन्मी है, जहन्मी है, जहन्नमी है। ऐसा लगता है अल्लाह ताला ने अपनी जन्नत का ठिकदार उन्हीं चन्द मूल्लाओं को बना दिया है और जिसको चाहते हैं जन्नत व जहन्नम की सनद देते रहते हैं। जब कि इनको खुद इल्म नहीं है कि मेरा हशर क्या होगा। मुनकराने ताजिया शरीफ के हजारों सवालात के जवाब में हम आशिकाने हुसैन अलैहीस्सलाम का जवाब सिर्फ ये होगा के किसी की ताजियत में जाना हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की सून्नत है और हिन्दुस्तान में ताजियादारी ख्वाजा गरीब नवाज और बहुत से बुर्जुगों की सून्नत है।

फकत खाकपाए औलिया अल्लाह
सूफी सईद मजहर अशरफी कादरी
चिश्ती निजामी गुफरला, खानकाह मुजतबायी अशरफीया
शम्भू पट्टी, हाजीपुर वैशाली (बिहार)

किताब मिलने का पता :

सैयद साबिर अली चिश्ति, टाटा हाउस

मुतस्सील इमामबारा, अजमेरशरीफ

खानकाह मुजतबाया अशरफया शम्भूपट्टी

डाकखाना-बोअरिया, जिला-वैशाली, बिहार (भारत)

एक नजर

अजमेर शरीफ, किछौछा शरीफ, कलियर शरीफ, मारहरह शरीफ, देवा शरीफ, पीलीभीत शरीफ, मकन्दपुर शरीफ, देहली शरीफ, मुरादाबाद शरीफ, खानकाहे नेयाजिया बरैली शरीफ, खानकाहे अरजानी पटना शरीफ और जद्दुआ शरीफ हाजीपुर वैशाली बिहार में ताजियादारी पूरी अकिदत व नेयाज मन्दी के साथ इन तमाम खानकाहों में जारी व सारी है।

"गमें हुसैन रूलाती है हर घड़ी मुझको,
मैं वो नहीं जो मुहर्रम का इन्तजार करूँ।
"मरगे यजिदी असल में कत्तले हुसैन है,
इस्लाम जिन्दा हो गया करबो बला के बाद
खुने हुसैन का जरा एजाज देखिए,
शिशी की मिट्टी सूर्ख है कत्तले सहा के बाद।"

मनकबत

नबी के नवाशे के दर का हूँ सायल,
हुआ जिनकी उल्फत में दिल मेरा मायल,
न शिकवा किसी से न फतवा दलायल,
हुसैनी हूँ मैं ताजियत का हूँ कायल,

तेरी ताजियत में बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है,

नबी ने चढ़ाया है कान्धे पे अपने,
लगाते रहे उनको सीने से अपने
वह खाते नहीं थे खिलाने से पहले,
लगा ताजिया को फिर कान्धे से अपने।

तेरी याद में ये बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है,

अबु बकर आये सदाकत बताने,
उमर आ गये हैं अदालत सिखाने
गनी आ गये हैं गनाएत लूटाने,
हुसैन आ गए दिन अहमद बचाने,

शहादत में तेरी बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है,

मजारें मुकद्दश का नकशा बनाया,

सभी ने अकिदत से इसको सजाया,
चुमा लबों से और कान्धा लगाया,
हुसैन इब्न हैदर का नारा लगाया।

एबादत के खातिर बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

कटाया है सर अपना सजदे में जाकर
खुदा की रजा और नबी की रजा पर
मकामे शहादत का रूतबा बता कर
जामे शहादत सभी को पिला कर।

शुजाअत में तेरी बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

कर्बला तेरी अजमत पर कुर्बान जाऊँ
तेरी खाक को अपने माथे लगाऊँ
तेरी याद में रो-रो आँसू बहाऊँ
मेरा दिल ये कहता है सर को कटाऊँ।

मोहब्बत में तेरी बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

हुसैन इब्न हैदर ने सबको सुनाया,
सभी को सदाकत फजीलत दिखाया,
नबी और अली की हकिकत बताया,

मगर कुफियों को समझ में न आया।

तेरी मारफत में बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

बहत्तर शहीदों पे जुल्मों सितम में,
हुसैनी हूँ आंसू बहाता हूँ गम में
मेरा जीना मरना है तेरे करम में
पड़े रह गए जो अभी तक वहम में।

ज्यारत की खातिर बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

ताजियत की हकिकत समझते हैं अनपढ़,
चले आते हैं मरने वाले के घर पर,
शरीक होते हैं गम में आँसू बहाकर,
कोई जा रहा अपना दामन बचाकर।

सदाकत में तेरी बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

बनाया है जिसने यहाँ फिरकाबन्दी,
समझ हो गई जालिमों से भी गन्दी
ये बोगजों अदाबत हुई कितनी सस्ती,
रहमतों के **सफिने** में ये कौम रहती।

हकिकत में तेरी बना ताजिया है

बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

न लो नाम हरगिज कभी बेवफा का,
ओ मलउन हैं देखो सारे जहाँ का,
रहे वृद्ध हरदम शाहे कर्बला का
लूटा काफिला जब हबिबे खुदा का।

बहाने को आंसू बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों .का ये ताजिया है।

जूबां की तेहारत खत्म हो गयी क्यों,
ये शीरी लताफत खत्म हो गयी क्यों,
हमारी सदाकत खत्म हो गयी क्यों
हुसैनी सुजाअत खत्म हो गयी क्यों।
मिटाने को जुल्मत बना ताजिया है,
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

काफिला दिने अहमद का कर्बल में जाकर
बहा खून सबका खुदा की रजा पर,
हुए सूरखुरू दिन अहमद बचाकर
यही दे रहा सदा तेरा मजहर।

करामत से तेरी बना ताजिया है
बहत्तर शहीदों का ये ताजिया है।

—सूफी सईद मजहर अशरफी

फरजनदाने तोहिद की पैदाइश व वसाल

- हुजूर सलल्लाह व अलैहे वसल्ल्म की जन्म 12 रबिअवव्ल मुताबिक 20 अप्रैल 571 ई. बरोज दो शम्बा के दिन सुबह सादिक के वक्त शहर मक्का में हुआ। इस्लाम की खफिया तबलिग 3 साल तक की। मक्का के इर्द-गिर्द 13 साल तक इस्लाम का पैगाम लोगों तक पहुँचाते रहे। 40 साल की उम्र में हुजूर सल्ललाह वलैहे वसलम पर कुरान मजीद नाजिल होना शुरू हो गया। हुजूर सलल्लाह वलैहे वसल्लम 53 साल की उम्र शरीफ में मक्का शरीफ से हिजरत करके मदीना शरीफ तशरीफ लाये। 63 साल की उम्र शरीफ में, 12 रबिउल-अव्वल 11 हिजरी मुताबीक 12 जून 632 ई. दोशम्बा के दिन मदीना शरीफ में वसाल हुआ। 15 रम्जान 3 हीजरी को हजरत हसन रजी अल्लाह अन्हा की पैदाइश हुई। 5 शाबानूल मोअज्जम 4 हीजरी को हजरत हुसैन रजीअल्लाह अन्हा की पैदाइश हुई।

हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम के वसाल के बाद हजरत अबु बकर सीददीक रजी अल्लाह अन्हो प्रथम खलिफा हुए। 2 साल तक खिलाफत के मनसब पर फायज रहे। 13 हीजरी में आपका इन्तकाल हुआ। उनके इन्तकाल के बाद हजरत उमर रजी अल्लाह अन्हो खलीफा मुकर्रर किए गए। 10 साल 6 महीना के बाद आपकी शहादत हुई, आप शहीद कर दिए गए।

- 24 हीजरी में हजरत उस्मान गनी रजी अल्लाह अन्हो खलीफा हुए। चन्द रोज कम 12 वर्षों तक खलिफा रहे और शहीद कर दिये गए।

35 हीजरी में हजरत मौला अली रजीअल्ला अन्हा खलिफा हुए। 4 साल 9 महीना खिलाफत का काम अन्जाम दिए और आप शहीद कर दिए गए।

- 40 हीजरी में हजरत हसन रजीउल्लाह अन्हा खलीफा हुए और कुछ महीने के बाद सबकदोश हो गए।
- 41 हीजरी में अमिर माविया खलिफा हुए। 19 साल 3 महीना तक खिलाफत का काम अंजाम दिया। 60 हीजरी में इनका इन्तकाल हुआ।
- 60 हीजरी में अमिर माविया का बेटा यजिद तख्त पर बैठा। यजिद 3 साल 9 महीना हुकूमत की और 64 हीजरी में मर गया।
- 10 मोहर्रमुल हराम 61 हीजरी बरोज जुमा के दिन असर के वक्त हजरत हुसैन पाक अलैहिस्सलाम और 71 बावफा साथियों के साथ बड़ी बेरहमी से मैदाने करबला में यजिदियों ने शहीद कर डाला हजरत इमाम आजम 80 हीजरी में कुफा में पैदा हुए।
- हजरत इमाम मलिक की पैदाईश 95 हीजरी में हुई और आपका इन्तकाल 199 हीजरी में हुआ।
- हजरत इमाम शाफई 150 हीजरी शहर फिलिस्तीन में पैदा हुए। हजरत इमाम हम्बल की पैदाइश 164 हीजरी में और वफात 241 हीजरी में हुई।
- हजरत इमाम बुखारी मोहम्मद इस्माईल 13 शोवाल 194 हीजरी बरोज जुमा की नमाज के बाद बुखारा में पैदा हुए और वफात 256 हीजरी में हुई।
- हुजूर सल्ललाह वलैहे वसल्लम के वसाल के दिन हजरत इमाम हसन रजीअल्लाह अन्हो की उम्र शरीफ 8 साल 6 महीना 3 दिन है। और हजरत इमाम हुसैन पाक की उम्र शरीफ 7 साल 6 महीना 23 दिन है।

"अन रसूलल्लाह सल्लल्लाओ अलैहे व आलेही वसल्लम
कालल हसन वलहुसैन सैसइल शवाब अहले जन्नह"

-अलहदिश

हुजूर सल्ललाह वअलैहे वसल्लम ने फरमाया–अहले बैत से मोहब्बत व मुददत रखना जान इमान है।

"मिनहब्बूल हसन वलहुसैन फकद जन्नी वमन बगज
बहमूल बताजनी"

-अलहदिश

हुजूर सल्लालाह वअलैहे वसल्लम ने फरमाया–जो हमारे अहले–बैत से दुश्मनी व बोग्ज रखता है वह हमारे साथ अदावत व बोग्ज रखता है और हमारे साथ अदावत व बोग्ज रखता है वह खुदा ताअला से अदावत व बोग्ज रखता है।

हजरत उम्मूल फजल बिन्त हारिश फरमाती है कि मैं हुजूर सल्लल्लाह वलैहेवसल्ल की खिदमत में हुसैन पाक को लेकर गयी और आका अलैहीस्सलाम की गोद में मैं हुसैन पाक को रख दिया। मैंने देखा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्ल्म की आँखों से लगातार आंसू बह रहे हैं। और उसी हालत में मुझसे फरमाया कि मुझे जिबरील ने खबर दी है कि मेरे इस बेटे को मेरी उम्मत शहीद करेगी। फिर जिबरील ने मुझे उसकी सुर्ख मिट्टी दी है। (अल्हदीस)

हजरत उम्मे सल्मा रजीअल्लाह अन्हा फरमाती है कि मेरे घर में हसन व हुसैन खेल रहे थे तो जिबरील अलैहीस्सलाम ने आकर हुजूर सल्ललल्लाह व अलैहे वसल्लम की खिदमत में अर्ज किया कि आपके बाद इस बेटे को आपकी उम्मत शहीद कर देगी। जिबरील का इशारह हुसैन पाक की तरफ था। और आपकी खिदमत में थोड़ी देर में मिट्टी पेश की। आपने उस मिट्टी को सूंघ कर

फरमाया–इसमें से रंज व बला की बू आती है और मुझे बुला कर कहा ऐ उम्मे सल्मा जब ये मिट्टी खून बन जाए तो समझ लेना कि मेरे हुसैन को शहीद कर दिया गया। फिर मैंने उस मिट्टी को शीशी में बन्द करके रख दिया। (अलहदिस)

दो मिट्टी

अल्लाह ताअला ने हजरत जिबरील को भेज कर मिट्टी तलब की और कलिब आदम तैयार किया, रूह डाली गयी और हजरत आदम अलैहीस्सलाम का वजूद कायम हुआ। माँ हौआ अलैहिस्सलाम को उनके बायीं पसली से पैयदा किया। यहाँ से औलादे आदम का सिलसिला चला और ऐसा चला कि ताकयामत तक सिलसिला चलता रहेगा।

दूसरी मिट्टी–हजरत जिबरील लेकर हुजूर सल्ललल्लाह वअलैहे वसल्लम की बारगाह में उस वक्त हाजिर हुए जब आपकी गोद में हजरत हुसैन पाक जलवाह फिगन है। और हुजूर सल्ललल्लाह वअलैहे वसल्लम अपने नवासे को बड़ी मोहब्बत से बगौर देख रहे हैं। हजरत जिबरील ने हुजूर सल्ललल्लाह व अलैहे वसल्लम से फरमाया कि आपके गोद में जो आपका नवासा है आपकी उम्मत के लोग उनको शहीद कर देंगे और ये उनके मूकतल की मिट्टी है ये मिट्टी देखते ही हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम के आँखों से आंसू रवा हुआ और हुसैन पाक के चेहरा मनौवर को आबदिदह निगाहों से देखते रहे। फिर हजरत उम्मे सल्लमा को मिट्टी देकर कहा–इसे शिशी में बहफाजत बन्द कर दो जब मेरे हुसैन कर्बला में शहीद होगा तो ये शिशी की मिट्टी खून से आलूद हो जाएगी। और शहादत हुसैन के वक्त वैसा ही हुआ और शिशी में रखी मिट्टी सूर्ख हो गई। हुसैन पाक मैदान-ऐ-कर्बला यानी इराक में शरीद हुए

और हजरत जिबरील के हाथों लायी हुई मिट्टी शीशी में बन्द मदीना मनौवराह में रखी हुई खून से आलूद हो गयी। ये है हुसैन पाक के खून का एजाज। ये है हुसैन पाक की अजमत शहादत कर्बला इराक में हुई और शिशी में रखी मिट्टी मदीना शरीफ में है और शिशी बन्द है और बन्द शिशी खून से लबरेज हो गयी। ये है शहादत हुसैन पाक की करामात।

मेरे अजीजो इन्सान आदम अलैहिस्सलाम की औलाद तो जरूर है जिसके जिस्म में रूह है जिसकी बुनियाद पे जिस्म में हरकतें है मगर इन्सान रूहानियत से खाली है। रूह में अगर ताजगी चाहते हैं तो हुसैन पाक अलेहीस्सलाम की मुहब्बत जरूरी है, जब बन्द शिशी की मिट्टी खून से आलूद हो गयी। जिसके अन्दर कोई जान नहीं है अल्लाह के प्यारे बन्दे आपके अन्दर तो जान है। क्यों नहीं यकीन व मोहब्बत के साथ दिल में हुसैन पाक की उल्फत का चिराग रौशन करते हैं ताकि बन्द शिशी की मिट्टी की तरह आपकी रूह भी जलवह महबूब से आरास्ता होकर नूर हो जाए।

"मजहरे रूहे शहादत है हुसैन, गौहरे गंज सआदत है हुसैन ।
जिसकी खुशबू से मोअत्तर है जहाँ, वह गुले बागे रसातल है हुसैन।।

हुजूर ख्वाजा-ऐ-ख्वाजगान अता-ऐ-रसूल गरीब नवाज ख्वाजा मोईनूद्दीन चिश्ती सन्जरी अजमेरी रजी अल्लाहो अन्हो उसी मकाम से कलमतराज है।

"शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन,-दिन अस्त हुसैन दिन पनाह अस्त हुसैन ।

सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यजिद-हक्का-ऐ के बिना-ए-लाइलाहा अस्त हुसैन

शाह दिन मोहम्मदी का होता है और बादशाह दुनिया का होता

है। ख्वाजा गरीब नवाज फरमाते हैं–हुसैन पाक दिन और दुनिया दोनों बादशाहों के बादशाह है यानी जाहरी बादशाहीयत और बातनी बादशाहीयत और दिन मोहम्मदी हुसैन पाक है और दिन को बचाने वाले भी हुसैन पाक है। सर दे दिया मगर हाथ न दिया यजिद के हाथ में और हकिकत तो ये है के ला इलाहा की बुनियाद है हुसैन पाक।

ख्वाजा गरीब नवाज अलैहे रहमतो रिजवान के इस अशार को अगर आप समझना चाहते हैं तो हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्ल्म के इस हदिस पाक को समझने की जरूरत है–

"हुसैन मिन्नी अना मेनल हुसैन।"

हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ.

हुजूर पुरनुर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम से इरशाद ग्रामी है–
"हुसैन मिन्नी अना मिनल हुसैन।"

हुजूर सल्लल्लाह अलैह वसल्लम के दो नवासे हैं। हजरत हसन रजी अल्लाह व अन्हा और दूसरे हजरत हुसैन रजी अल्लाह ताअला अन्हा। बड़े का नाम हजरत हसन है और छोटे का नाम हजरत हुसैन। पैगम्बर इस्लाम हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम ने अपने दोनों नवासे के मोतल्लिक (बारे) में फरमाया मेरे जिगर के टुकड़े हैं। ये दोनों जन्ती फूल है जिसको मैं सूंघा करता हूँ। अगर किसी ने इन लोगों को तकलीफ दी गोया उसने मुझको तकलीफ दी। हसन अलैहीस सलाम व हुसैन अलैहीस्सलाम की मोहब्बत को हुजूर सल्लल्लाह व अलैही वसल्ल्म ने इस तरह इशारह करके आगाह फरमाया। अपनी निस्बत का जिक्र फरमाया। मगर हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम ने ये नहीं फरमाया के–

''हसन मिन्नी अना मिनल हसन''

हसन मुझसे है और मैं हसन से हूँ। हुजूर सल्ल्ल्लाह व अलैहे वसल्लम ने अहले बैत की तारीफ की अल्लाह ताअला ने भी कुरान में अहले बैत की तारीफ की। हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम ने हजरत फातमा को अपने जिगर का टुकड़ा कहा, मगर ये नहीं कहा कि–

''फातमा मिन्नी अना मिनल फातमा।''

हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम ने सिर्फ और सिर्फ ये फरमाया–''हुसैन मिन्नी अना मेनल हुसैन''

हुसैन मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ।

दुनिया जानती है कि नाना से नाती का वजूद कायम और दायम है मगर रोज अव्वल से लेकर सुबह कयामत तक कोई फर्द इसको तसलिम नहीं कर सकता है कि नाती से नाना का वजूद कायम हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम इस खाक दान गिती पे वाहिद फर्द है जो ये कह रहे हैं ''अना मेनल हुसैन'' मैं हुसैन से हुँ आखिर ऐसा क्यों। हम उम्मती हैं अहले अकिदत है आँख बन्द करके तसलिम करेंगे मगर दुनिया वाले इस रमूज को कैसे तसलिम करेंगे उसकी फिकर हम अहले अकिदत को हरगिज नहीं क्योंकि दुनिया तसलिम करे न करे हम अहले मुहब्बत तो दिल से तसलिम करते हैं।

हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम के इस कौल को समझने के लिए दो चीजें जरूरी हैं–अव्वल मोहब्बत रसूल सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम, दोएम अहले बैत रिजवानुल्लाहो ताअला अजमईन। इसलिए की इमान की तकमिल हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम की मोहब्बत है। बगैर उलफते रसूल सल्लाल्लह व अवैहे वसल्लम

के इमान की तकमील नहीं हो सकती। और बगैर हुब्बे अहले बैत के रूह में रूहानियत नहीं आ सकती। जिस तरह जिस्म के लिए रूह का होना जरूरी है। अगर जिस्म हो और रूह नहीं हो तो इन्सान मुर्दा हो जाता है। रूह एक कीड़े के अन्दर भी है रूह जानवर में भी है, रूह काफिर में भी है, रूह मुसलमान में भी है, रूह मोमिन में भी है, रूह वली में भी है, रूह नबी में भी है। वह रूह जो रूहानियत से सरशार है, हजूर सल्ल्ल्लाह व अलैहें वसल्लम और अहले बैत की मोहब्बत का फैजान उन हजरात पे कायम दायम है–

"यदे बैजा लिए फिरते हैं अपनी अस्तिनों में।"

अल्लामा एकबाल

हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम का कौल है–"हुसैन मिन्नि अना मेनल हुसैन" जबकि अहले अरब अच्छी तरह वाकिफ है के हजरात हुसैन पाक हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्ल्म के नवासे है। फिर हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम को ये कहने की क्या जरूरत पड़ गई कि अहले सहाबा कराम रिजवानल्लाहो ताअला अजमईन से खताब फरमा रहे हैं कि "हुसैन मिन्नि अना मेनल हुसैन।" जबकि सबके सब अच्छी तरह से वाकिफ है के हुसैन अलैहेस्स्लाम नबी के नवासे हैं। हाँ आका अलेहीस्स्लाम जरूरत इसलिए महसूस कर रहे हैं कि अहले सहाबा अहले अकिदत तो हर दौड़ में तसलिम करेंगे मगर यदिज और यजिदी नस्ल हुसैन के खून को बहाना और कत्ल को जायज समझेंगे। एक ऐसा भी दौर यजिदियों का होगा जो हुसैन के नवासऐ रसूल होने से इनकार करेंगे और कत्ल हुसैन को जायज समझेंगे और यदिज पलिद को खलिफऐ मुसलेमिन समझेगें। यजिद पलिद और उनके हमनवा ये कहकर दुनिया को बताने की कोशिश में रहेंगे कि यजिद खलिफतूल मूसलेमिन है और दुनिया इस बात को मान लेगी। जैसा

कि बहुत से लेखकों ने अपनी किताबों में इस का इजहार किया है। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पहले अपने निसबत का ऐलान फरमाया कि हुसैन मुझसे है और फिर फरमाया–अना मिनल हुसैन। यहाँ पर हुसैन पाक की रूही निस्बत का तजकरह फरमाया। रूही निस्बत में रूहानियत और शहादत का जिकर फरमाया ये मजहब इस्लाम काबा की अजमत मदीना शरीफ की हुर्यत ये सब मेरी मौजूदगी में है मगर आने वाली यजिदी आंधी में ये सब का शिराजह बिखर जाएगा जैसा कि एक लाख चौबीस हजार कम व बेश अम्बेआ आए और उनके जाने के बाद नाम व निशान तक मिट गये। उनमें चन्द ही तवारिख के पन्नों में महफूज है। गैबदाँ नबी ने अहले सहाबा में एलान फरमाया–हुसैन मिन्नि अना मेनल हुसैन।'' मैं हुसैन से इसलिए हूँ कि मजहब इस्लाम की सदाकत अल्लह ताअला की वहदानियत, काबा की अजमत, मदीने-शरीफ की हुरमत, रसूल की सलामत की तहफफूज होगी तो ये शहादत हुसैन से होगी और शहादत हुसैन हुई। मजहबे इस्लाम को आपके खून के कतरों से सींचा गया और हमेशा-हमेशा के लिए मजहबे इस्लाम को बका मिल गयी।

"हक्का के बना लाइलाहा अस्त हुसैन।''

–ख्वाजा गरीब नवाज

"काम आ गई फेराक को उलफत हुसैन की, कलमा पढ़े बे-गैर मुसलमान हो गया।'' (फिराक गोरखपुरी)

"मरगे यजिदी अस्ल में कत्ले हुसैन है,
इस्लाम जिन्दा हो गया कर बो बला के बाद।''

–सूफी सईद मजहर अशरफी

"रूह को बेदार तो हो लेने दो
हर फर्द पुकारेगा हमारे हैं हुसैन ।"

—सूफी सईद मजहर अशरफी

"हुसैन न होते तो खत्म था इस्लाम
कश्ति-ऐ दहर मे ठहरी थी न खुदा के लिए
कहाँ हुसैन कहाँ यजिद पलिद
कोई जफा के लिए था कोई वफा के लिए।"

"ऐ हुसैन वह काम कर दिया तूने, हक व बातील देखा दिया तूने
जी के मरना तो सबको आता है, मर के जीना सिखा दिया तूने।

इस्लामी साल का पहला महीना अल्लाह ताअला की वहदानियत और रसूल्लाह सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम की रसातल के गवाहों का महीना मुहर्रमूल हराम है। ऐसी गवाह तो तवारिख आलम में न देखने को मिली है न सुबह कयामत तक ऐसी गवाही व ऐसी शहादत पेश कर सकी है, न कर सकेगी। जिनकी मोकददस जिन्दगी की इब्तदाए शहादत से गुंजी और ता कयामत तक गूँजती है रहेगी। जिनकी शहादत अभी हुई नहीं है ताअज्जुब है उनकी शहादत के गवाह हजरत जिबरील हो, हुजूर सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम, हजरत कुल्सूम हो, हजरत अली हो, हजरत फातमा हो सहाबा, कराम रिजवानुल्लाह अलैहीम अजइमन हो अहले मक्का हो, अहले मदिना हो गोया पैदा होते ही अल्लाह ताअला आपके मन्सब शहादत का जिकर फरमाया अहले अरब की जबान पर आपकी शहादत का जिकर होने लगा। आपकी शहादत का रंग ऐसा गालिब हुआ कि कायनाते आलम का जर्रह-जर्रह आपकी शहादत का गवाह बन गया। इस्लामी साल का पहला महीना कुर्बानी से नहीं शहादत हुसैन

पाक अलैहीस्सलाम से शुरू होता है और इस्लामी साल का आखिरी महीना जिल हिज्जा कुर्बानी पर खत्म होता है। इस्लामी साल का इब्तदा शहादत और इन्तहा कुर्बानी है।

शहादत के दो लफजी मानी है। शहादत माना शहीद शहादत माना गवाह। हजरत हुसैन अलैहीस्साम शहीद भी और "लाई लाहा" के गवाह भी है। हजरत इस्माईल जबिउल्लाह की कुर्बानी हुई। इसलिए हजरत इस्माइल को जबीउल्लाह कहा गया। शहिद अल्लाह नहीं कहा गया। और हजरत हुसैन पाक "शहिद अल्लाह" ही नहीं बल्कि "शहिदे आजम" है। कुर्बानी तो गाय और बकरे की होती है, जानवरों की होती है और शहादत अल्लाह ताअला के नेक बन्दों की होती है। इस्लामी साल का पहला महीना शहादत हुसैन से शुरू है और इस्लामी साल का आखरी महीना कुर्बानी पर खत्म है। अगर कोई यह कहता है कि इस्लामी साल का आखरी महीना कुर्बानी पर खत्म है और इस्लामी साल का पहला महीना कुर्बानी से शुरू है, ये इन्साफ का जुमला नहीं है बलि इसकी हकीकत को रूहानियत की मंजिल से देखना होगा।

बहरे कैफ हदिस पाक की रौशनी में हुसैन पाक माँ के शिकम मुबारक से नमूदार होते ही शहादत हुसैन का जिकर शुरू हो गया और ताक्यामत शहादत हुसैन का तजकरा होता है और होता रहेगा।

हदिस पाक और उसका रम्ज

हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसुल्लम ने अपने कान्धे मुबारक पर हुसैन पाक को चढ़ा लिया और उस वक्त हजरत हुसैन पाक की उम्र शरीफ 2 साल की थी। जाहिर है सड़वरे कायनात का कोई काम हिक्मत से खाली नहीं है, अपने कांधे मुबारक पर हजरत हुसैन को सवार करके आका अलैहिस्सलाम टहल रहे हैं। अगर आका अलैहिस्सलाम खड़े रहते तो ये गुमान लगाया जा सकता है कि जो आदमी जहाँ खड़ा है उसकी मंजिल वही तक है मगर आका अलैहिस्सलाम अपने कांधे पर अपने नवासे हुसैन को सवार करके चल रहे हैं। अब चलते हुए आदमी के मंजिल का अंदाजा नहीं हो सकता है। के वह कहाँ तक जाएगा ये चलने वाला ही समझ सकता है। बहरे कैफ हुसैन पाक को अपने कन्धे र बैठा कर हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लम आगे की तरफ बढ़ रहे हैं। इसी दौरान हजरत अबू वकर रजी अल्लाहो अन्हा ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लाम के कान्धे पर हुसैन पाक को देखकर ताअज्जूब में पड़ गए और अपनी अन्दरूनी कैफियत का इजहार अपनी जुबान मुबारक से यूँ फरमाने लगे–आज हुसैन पाक को कितनी अच्छी सवारी मिल गयी है। हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहेवसल्लम ने हजरत अबूवकर सिद्दीक रजिअल्लाहो अन्हो को मुखातीब करके फरमाए-ए अबू वकर सवारी अच्छी है तो सवार भी कितना अच्छा है।

"इस रम्ज को कोई क्या जाने इस भेद को कोई क्या समझे क्यों आके पतंगें गिरते हैं, क्यों शमा जलाई जाती है।"

हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लम ने सवार भी कितना अच्छा है ये कहकर सहाबा कराम और हजरत अबू बकर सिद्दीक रजी अल्लाहो अन्हो को हुसैन पाक की अजमत और मनसब शहादत

अयां फरमा दिया और हम अहले अकिदत को एक बेहतरीन अमल फरमाया। कल हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसुल्लम के कान्धे पर हुसैन सवार है और ये कह रह हैं अबु बकर सवार कितना अच्छा है। आज हम गुनाहगारों के कंधे पर हुसैन पाक नहीं मगर हुसैन पाक का ताजिया शरीफ तो है। हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसुल्लम ने हजरत हुसैन पाक के पैदा होने पर पहले खुशी का इजहार फरमाया जब हुसैन पाक की शहादत की खबर जिबरील ने दी तो गम का इजहार फरमाया। गम का इजहार करना ही तो ताजीयत है। हम गुलामाने मुस्तफा ताजियत के साथ ताजिया कान्धे पर रखकर घुमाते हैं।

हजरत अबू-बकर सिद्दीक रजी अल्लाहो अन्हो ने फरमाया–हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहो व अलैहे वसुल्लम की खुशनुदी आपके आहले वैत में पोशिदह और मजम्मिर है (हदीश बुखारी, जीन्द दोएम, सफा (पृष्ठ) 417 नम्बर 94)।

हजरत इमाम शाफई पर राफजियत का इल्जाम

हजरत इमाम जाफर सादिक रजिअल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि किस कदर तासिफ आमेज बात है कि अहले बैत की मोहब्बत की वजह से हजरत इमाम शाफई को राफजी का खंताब देकर कैद व बन्द सबूतों में डाल दिया गया। इमाम जाफर सादिक अपने शेर में इशारा फरमाते हैं कि अहले बैत से मुदत्त का नाम रफज है तो फिर पूरे आलम को मेरे राफजी होने पर ग्वाह रहना चाहिए–

(किताब, तजकरूल औलिया, सिफा नम्बर 11)

असहाबे सुफ्फा

हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लम ने अस्साहाब सूफफा को इस्लामी कायदा व बातनी पकिजगी का सबक ,बतलाया। तेतीस बुर्जुग शखसियतें मस्जिदें नब्वीं के दरवाजा पर एक चबूतरा था वहीं उनका क्याम रहता था। उनका लिबास घाल पशमिनिया टाट का मोटा लिबास था। खुराक में हर तरह कनाअत थी। जैसा हुजूर सल्लल्लाहो व अलैह वससल्लम का हुक्म होता जाकर लोगों को असूले पाकिजगी बतलाते थे। ये असहाबे सूफफा सूफी कहलाये। ये सूफियाए कराम हजरत मौला अली के पाए हुए अम्ल को लेकर बैरूने अरब में पहुँचे। फसाद से किनारा कश होकर अमन का पैगाम अैन मोहम्मदी इल्म जवान के सीने में महफूज की गयी थी। सिराजन मनिरा के कायदा से एक चराग से दूसरे चराग को रौशन करते रहे।

इल्म तसउफ और सूफियाए कराम का फैज है के मजहबे इस्लाम अमन व रहमत के साथ आज भी शहर अफाक है। गर वह सूफिया ताजियत और ताजियादारी, पीरी-मुरीदी मानते हैं। अहले तसउफ के बुनियादी उसूल व हुदत्त वालूजूद और मोहम्मद सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लम शान शाहिदाँ मुबशरा व नरिजा है। हजरत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ताजियत अरफा व आला एबादत मानते हैं। सुन्नी हनफी मसलक के मानने वालों में पिरी-मुरीदी का तरीका रायज है। ये लोग सूफी कहलाते है। (किताब ताजिया की हकिकत)

अकिदा परख कसौटी

महज शरियत की पाबन्दी पोशाक, नमाज रोजा, हज, कुर्बानी के फराएज अदाकर लेने से ही मुसलमानों को नहीं परखा जा सकता है। क्योंकि कातलाने कर्बला भी मुसलमान नुमा थे। वह भी नमाज-रोजा के फराएज अदा कर लेते थे। और एक से एक मदअयान नबौवत जैसे बहाई कादयानी वगैरह भी नमाज रोजा वगैरह के फरायज अदा कर लेते हैं। शरई पोशाक नमाज रोजा के फरायज अदा करके कौम को फरेब दे सकते हैं अलबत्ता ताजिया दारी एक ऐसी कसौटी है जिससे मुसलमानों के हक् व बातील अकायद को अच्छी तरह परख लिया जा सकता है क्योंकि जितने पैगम्बरान गुजरे हैं सब मुसलमान ही थे। लेहाजा सबकी उम्मतें मुसलमान है। मगर आज यहूदियों, पारसी, मजूसी, नसरानी, सूलेमानीं और हिन्दू वगैरह को मुसलमान नहीं समझा जाता हैं मौजूदह सिर्फ वह लोग मुसमलान हैं जो कलमा और काअबा के मानने वाले हैं। ठीक उसी कायदे से कलमा और काबा वाले सब मुसलमान जरूर हैं। मगर उम्मेत मोहम्मदिया कहलाने वाले के लिए सिर्फ वह लोग हकदार हैं जो इमाम हुसैन और ताजिया के अहल है। क्योंकि मुसलमानों में यही दो प्लेटफार्म है जिस बनी हाशिम व बनी उमैया या यूं कहें अहले हुसैन या अहले यजिद। इब्राहिमी व इस्माइली मिल्लत का नमूना काअबा है।

वैसे ही मोहम्मदी व हुसैनी मिल्लत का नमूना ताजिया है। मोहम्मदी, इस्लाम का जिस्म इब्राहीमी व इस्माइली है जिसकी जान दिन मोहम्मदी है और रूह जिक्करे हुसैन इसलिए मोहम्मदी इस्लाम जिन्दा और सलामत है।

किताब ताजिया की हकीकत

1. जिस जगह मुसलमानों को दफन किया जाता है वह जगह कब्रिस्तान कहलाता है।

2. जिस जगह में मुसलमानों को दफन किया जाता है वह जगह कब्र कहलाता है।

3. जिस जगह वली-अल्लाह को दफन किया जाता है वह जगह मजार मुकददस कहलाता है।

4. जिस जगह को ताजिया शरीफ को रखा जाता है वह इमाम बारह कहलाता है। यानी इमाम बारह (12) इमाम से निस्बत रखने वाली जगह इमामबारह है।

5. जहाँ ताजिया गर्कयाब किया जाता है वह जगह अरफ मे कर्बला है।

नोट-ताजिया शरीफ कहिए या इमाम बारह कहिए या कर्बला कहिए इन तमाम लफजों को सुनते ही हुसैन पाक की शहादत का नक्शा दिल में मोअज्जन हो जाता है और निगाहें अश्कबार हो जाती है।

हजरत शाह नेयाज अहमद नेयाज बरैलवी रहमतुल्लाह अलैहे

एक मर्तबा जनाब अकबर अली साहब आये और आपसे चन्द बातें दरियाफत किए। उनके सवालात और आपके सवाल का जवाब ये है-

पहला सवाल-समाअ के मुतल्लिक आपका क्या हुक्म है। आपने जवाब दिया ढोल की आवाज ऐसी कानों में भरी है कि दूसरी

बात सुनाई नहीं देती।

दूसरा सवाल—ताअजिया की मुतल्लिक आप क्या फरमाते हैं। जवाब—अगर ताअजिया बनाना होगा तो मैं इजाजत ताअजिया बनाने का न दूँगा। इस वास्ते के कमा हककए इसकी ताअजिम न हो सकेगी और जो बन गया होगा तो जितना मुमकिन हो ताजिम करूँगा।

तीसरा सवाल—यजिद लउन के मुतल्लिक क्या ख्याल है। आपने जवाब दिया—आज तक अल्लाह ताअला ने मेरी जबान को इस नाम खबीश से बचाया है। मेरी राय में एक मर्तबा ये जबान से निकल जाए तो दिन भर जान की निजास्त नहीं जाती। मैं तो लउन या गैर लउन मैं उसका नाम भी नहीं लेता। इतनी देर हसन-हुसैन क्यों नहीं कहूँ कि नूर इमानी से सरसार हो जाऊँ।

(किताब काजी हमिदूददीन नागौरी)

हुसैन पाक और खाक-ए-कर्बला

बर आजम अमेरिका में यौम आशुरह के मुनासबत बहुत बड़े जुलूस बर आयद होते हैं। यहाँ इमाम हुसैन पाक के मुकत्तिल खाक-ऐ शिफा की फरीह मौजूद है जो किसी और के पास शुमाली अमेरिका में नहीं है। इस फरीह की खाक का रंग असर आशुरह में मुकम्मल सूर्ख हो जाता है और रंग बदलते ही कुहराम मातम बपा हो जाता है।

(सहारा अखबार-4 दिसम्बर 2011 ई. बरोज एतवार, पटना)

आज चौदह सौ वर्ष गुजरने के बाद भी खून हुसैन पाक का एजाज देखिए और देखते ही देखते असर आशुरह के वक्त मुकत्तिल हुसैन पाक की मिट्टी खून से आलूद हो जाती है और आशिकाने हुसैन पाक का दिल इस मंजर को देखकर मातम कदह बन जाता है। अजिजों ये मिट्टी बेजान है मगर निसबत हुसैन पाक के मुकत्तिल से रखती है। जब मिट्टी को मुकत्तिल हुसैन से निसबत मिल गई तो असर आशुरह मुकम्मल सूर्ख हो जाती है। हम गुनाहगारों को भी इमाम हुसैन की सच्ची मुहब्बत हो गयी तो उल्फत हुसैन पाक में रूह को मुकम्मल ताजगी मिल जाएगी। जिस तरह मुकत्तल हुसैन पाक की मिट्टी को मिलती है।

फिकर व नजर

61 हिजरी में शहादत इमाम हुसैन पाक हुई। 86 हिजरी में खानदान बनी उम्मैया का मशहूर बादशाह वलिद बिना अब्दुल मलीक तख्त नशीन हुआ। इसके दौड़ हुकुमत में अरबी हुकूमत का झण्डा स्पेन से चीन तक लहराने लगा। अरब, इराक, शाम, अफ्रीका, बड़ा आजम, ईरान, मिस्र, सब इनके क़ब्जा में था। अरब ताजीर दुनिया के कोने में फैलकर एक तरफ तिजारत दूसरी तरफ तबलिग इस्लाम का फरिजा भी अन्जाम देते रहे। अल्लाह ताअला की वहदानियत और हुजूर सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लम की पाकिजह जिन्दगी व इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम की यजिदीयों के हाथों में हुई शहादत का जीकर व पैगामे हक मुसलमानों व काफिरों के दरम्यान सुनाते रहे और दावत-ए-इस्लाम से लोगों को अपनी तरफ मोतवज्जह करते रहे। धीरे-धीरे कुफर की जंजीरें टूटने लगी और कुफ्र इस्लाम मे बदलने लगा। वहदानियत का तजकरह करके दिलों को सकुन अता किया। रसालते माब का मोजजा लोगों में ब्यान फरमाया। जब काबा और मदीना का नकशा का जिकर किया तो दिल मुसलमानों का बेकरार हो गया और अहले अरब से कहने लगे कि आखिर काबा और मदीना शरीफ का नक्शा कैसा है। माजी (भूत) में न कैमरा वगैरह था जिससे काबा व मदीना शरीफ की तस्वीर खींच कर हृदय को शान्ति अता किया जा सकता था। बड़ी दानिशमन्दी से अहले अरब के मुसलमान ने आपसी मश्वरह किया क्यों न बांस की लकड़ियों को तराश कर कमाचियाँ निकाली जाए शबिहे काबा और मदीना शरीफ का निर्माण कमाचियोंको बाँध कर की जाए और उसके बाद रंगीन कागज से मोजैयन किया जाए। ये आपसी मश्वरह सबों के लिए एक नेक और अच्छा मश्वरह था। फिर क्या था देखते ही देखते हिन्दुस्तानी मुसलमानों के सामने काबा और मदीना शरीफ

का नक्शा अपनी रात दिन के काविशों से मोजैयन होकर उन लोगों के रू-बरू पेश किया। जब हिन्दूस्तानी मुसलमानों और गैर कौमों ने काबा और मदीना शरीफ के नक्शे को अपनी सर की निगाहों से देखा तो दिल मचल गया। आंखें नम हुई। लबों से बोसा लिया, आंखों से लगाकर सर पर रखा और बेकरार दिल को शकुन ऐ कल्ब मयस्सर हुआ। काबा और मदिना शरीफ के नक्शा को अपनी निगाहों और कल्ब में मोजैयेन करके ऐबादत इलाही में मशगूल हो गए। मेरे अजिजों क्या बांस का पेड़ हराम है? क्या इनकी कम्चियां हराम है? क्या बांधने वाली रस्सी हराम है? क्या कागज हराम है? जब हराम नहीं है तो ये यजिदी मोलवी कैसे ताअजीया शरीफ को हराम कहते हैं। मैं काबा शरीफ व मदीना शरीफ का तोगरा घरों में रखना जायज और दुरूस्त है फिर इमाम हुसैन का ताजिया कैसे हराम है?

हकिकी दलायल

ऐ जाहीद खुशके हाँ लफजे ताजिया मूतकफ्फज व ताजियत रस्म मारफा गैर इल्म है न कि तेरी समझ मे मवाफिक इस्म मारफा इल्म जिसके अर्थ (मानी) भी मातम परश्ती के हैं। और बाएतबारे मार्फा गैर इल्म होने के ताजीयत ही के जहत से ताजीया नाम रखा गया है वरना इसका नाम ताजीया ही न होता और हस्बे फरमाने रसूल अलैहीस्सलम "अल अमालो बिन्नेयात"। ताजिया बे निसबत ताजीयत शरअन जाएज समझ कर एखतेयार किया गया है और ताजियत आम व खास हर मुसलिम बराए आम व खास हर मुसलिम मखसूस ताजियते अहले बैत इजहार रसूल अलैहिस्सलाम फेल हसन गैर शरालामर व गैर मोहददीश व बिदअत मसतनबत शरीयत व तरीकत व हकीकत व मारफत से किया गया है। इसलिए पढ़े-लिखे नाम मोहम्मद फाजील । किस कदर अजीबूल अजाएब बात तेरी है के गाय व बैल और बकरा जो शरीयत में हलाल है। महादेव इस्म शैतान की तरफ मनसूब गाय की साँढ़ और गणेश के नाम का छोड़ा हुआ बैल का साँढ़ और ग्द् खन्नास के नाम से मनसूब बकरा तेरी कजाऐ के नजदीक हलाल से हराम हो जाता है। लेकिन हुसैन अलैहीस्सलाम जो बे नियत ताजियत हुसैन अलैहीस्सलाम के यकिनीनी अजयबाहत शरीया से है जाएज नहीं होता है। ऐ ना समझ इमाम हजरत हुसैन अलैहीस्सलाम मुस्समा व मजहर इस्मे सिफत अल्लाहलवी हैं बामूश्किल महादेव अलैयूललइने मुसम्मा व मजहर इस्म इब्लिस व शैतान–"काल्लहो ताअला फी कुरआनील मुबिन अल्लाहो व लिउल लजीन आमनू।" तरकीब नहवी मे लफजे अल्लाह मुबतदा वाके है और लफजे वली और मुबतदा की खबर जिसके मानी है अल्लाह वली है बर अक्स के उसके महादेव और

गणेश और सद व मुसम्मात मूजाहीर इस्माए शैतान जैसे गाय, बैल, बकरा इस्माए मजकुरह मुजाहर व मुसम्मीयात इस्म शैतान की तरह मनसूब कर देने से हलाल से हराम हो गया।

बहुक्मे मुतल्लिक ताजीया इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम मुस्म्मा व मजहर इस्म सिफत अल्लाह अल्वी होने के अगर हराम था तो भी जायज व हलाल है वाकई मूल्लाएँ तफतजानी मुसन्निफ मुखतसर मानी रहमतुलह अलैहे का माकूला के इस्लाम का बानी अरब के ऊँटों के गर्दनों पर से ब गया नहायत जरूरी है (किताब जवाजे ताजीया)

प्यारे मुफती शरअन तामीर रौजा बे जनाजना नाजाएज है या रौजए बे जनाजा पर बैन करना या तामिर रौजए बे जनाजा और रौजए बेनजाजा पर बैन करना दोनों जाएज है। अगर तामीर रौजए बे जनाजा नाजाएज है तो फेले खल्पुए राशदह से अभी माबैन मूदफन सैयना मोहम्मदूर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम व सैयदना अबू बकर सिद्दीक रजिअल्लाह अन्हा मुदफन ईसा अलैहीस्सलाम के लिए जाए मुकर्रर किरदह खुल्फाए राशदीन रजिअल्लाह अन्हा के जिस पर शक्ल रौजा भी है मौजूद न होती। अगर तामीर रौजाए बेजनाजा नाजाएज शरई होती तो मूदफन ईसा अलैहीस्सलाम बे जनाजा और बा रौजा फेल खूलफाए राशदीन रिजबानल्लाह अलैहीम अजमईन न होता। पस जबकि नफस तामीर रौजाए बे जनाजा अम्ले खुलफाए राशदीन रजीअल्लाह अन्हा है तो तमामी उम्मत रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहेवसल्लम के लिए तामीर रौजए बे जनाजा हसबे फरमाने सही रसूल सलल्लाहो अलैहे वसल्लम के "अलैकुम मुसन्नि व सून्नतो खुल्फाए अरराशेदी ने अलमुहददेशीन" का हासिल कलाम ये है ऐसे मेरी उम्मत तुझ पर मेरा भी उत्बा लाजीम है और मेरे उन खुलफाओं का भी जो खुद भी हिदायत पाए हुए हैं

और दूसरे को भी हिदायत करने के काबिल है। ये यकिनी शरई जाएज है। रहा बैन करना जो दहाड़े मार-मार कर और छातियाँ कुट-कुट करके रोना कहलाता है। सो ये दो किस्म का होता है। एक तो ये कि इरादा से ये सूरत अख्तेयार कर लेना इसे बैन एखतयारी कहते हैं और ये नाजाएज है। दूसरा ये कि किसी दूसरे वजह से बे इरादा व बे एखतयार खुद व खुद अज रिश्ता मुहब्बत अजतरान ये सूरत पैदा हो जाए जैसे सिवाय चन्द हजरात खस्से खवास उम्मते हाजरह व मौजूदह च जकरूचा "उनसया कल्हुम अजमउन" से रहलत वफात सैयदना मोहम्मद रसूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस कैफियत व सूरते इजतराबी व गैर इरादी व बे अख्तेयारी का जहुर हुआ था। लेहाजा आज कल के मुफतीयों की तरह नहीं के बेन बेअखतेयारी व इरादा वे न इजतरारी व बेइरादी व गैर इखतेयारी के अहकाम ही को शरीयत से मुस्तकहम होकर अलैहेदा-अलैहदा व जारी करे बल्की ख्वाह अपनी इल्मी वे बजाई के सबब या कम फहमी के बाअश गदहे व घोड़े दोनों को अललटूप एक ही हाँक-हाँक बेन इखतेयारी व बेन इजतरारी दोनों को जाएज ही करार दे। बेतकल्लूफ सख्ती तकरीरी या तहरीरी उम्मते मरहुमा पर बरसने लगते हैं और ये खताएँ अजिम है। "या आइयुहल उल्माए" फारूक आजम उमर रजी अल्लाह अन्हा भी मौका मजकूरह इश्क पर जो हीजाने मोहब्बते रसूल सल्लल्लाहो व अलैहे व सलल्म मे एहसासे फिराक से इजतराइन बे इरादह व बफीर बेएखातेयार धाड़ मार-मार और छातियाँ कूट-कूट और बेयान करके रोने वालों पर मसलेहतन तादीबन (न के खता शुद) कस्सदे तशददूद करना बैठे थे। लेकिन कुरबान जाइए आप की इसतदाद शउर पर के सददीक अकबर रजी आल्लाहो अन्हा के ये फरमा देने से ऐ उमर चुकी ये कैफियत इखतेयारी तो है नहीं के जो नाजाएज हुई। ये कैफियत कैफे इजतरारी

बे इरादी है वगैरह इखतेयारी एहसास फिराक से हिजाने मोहब्बत रसूल्लाह सलल्लाह हो व अलैह व सल्लम में है।

ऐ उमर "अलइशकअ हरीसून लेमा मूनेअ" इन लोगों से हरजिग हरजिग सख्ती बरतने का कसदन न करो उन्ही के हाल पर छोड़ दो। चुनानचे फारूक आजम रजीअल्लाहो अन्हा ने तरके कसद तशददूद फरमा उम्मत को उम्मत के हाल पर छोड़ा। हजरत सिद्दीक अकबर रजी अल्लाहो अन्हा के खुत्बा सूनने की तरफ तवज्जा मबजूल फरमा दिया। लेहाजा ऐसे मोके पर कि जहाँ कैफियत इजतराबी बे इरादी गैर इखतेयारी पैदा हो जाता हो और वहाँ खुल्फाए राशदह तक से सिवाए खामोशी और सकूत के और कुछ न सरजदह हुआ हो तो फिर ऐसे मौका पर उनके एतबाअ मे हम सबको किस बरहानेकातअ शरई कर खामोशी और सकुत लाजिम नहीं। क्या हम जमिए इफराद जिन्स उन्मत बकौल रसूलल्लाह सलल्लाहो अलैहे वसल्लम इस इमर के मामूर नहीं किए गए के उम्मत को चाहिए कि मेरी आल से मोहब्बत करे। हुजूर सरवरे आलम सल्लल्लाहो व अलैहे वसल्लाम ने कभी अल्लाह ताअला से दूआ ये इलतजा नही की किे ऐ अल्लाह ये दोनो महबूब है मेरे तु भी इन दोनों को महबूब गिरदान ले और मेरी उम्मत से भी जो मोहब्बत करे उनसे उसे भी महबूब समझना। अपना जनाब मुफती साहब ये तो फरमाए के बैन का करना फेल नफस ताअजिया रौजाए बे जनाजा होता है या फेल जाहील अमेरे दिन अगर बैन का करना वाकई फेल जाहील व उमरे दिन होता है तो इसमे नपस ताजिया रौजा की खताए जो नफसे ताजिया ये अताब नाजिल किया जाता है के ताजिया दिया सलाई लगाकर फूंक दिया जाए और उसको देखने से लोग इजतनाब करे ताकि उनकी बिबियाँ उनके अक्द से खारिज न हो जाए क्योंकि ताजिया इन अजाएव व गराएव कबाएर का लोगों को मरतकब कर

दिया करते हैं जिससे इनकी बिबियाँ उनके अक्द से खारिज हो जाया करती है। "अल अयाज बिल्लाह अल अयाज बिल्लाह"।

अल्लाह ताअला ने खानऐ काबा को बेनियत बैतुल्लाह बराए कर दने तवाफे ताफईन और बराए करवने रूकूए राकइन और करवने तवाफे ताफईन और बराए करदने सजदह साजदनीन बनवाया था। लेकिन जबकि हमारे आका मुहम्मद सलल्लाहो व अलैहे व सल्लम ने अपनी मबउस फिलअरब होने के बाद खाना काबा बैतुल्लाह को देख के कुफफारे मुशरेकीन अरब ने इसे बैतुल्लाह समझा और इसमें अल्लाह ताउअला के तवाफ व रूकू व एत्तेफाक व सजदा भी करते बल्कि बाकहा इसे सनम खाना समझ इसमे लात और मनान और हुबल और अजया जैसे हजारों नहीं बल्कि इसके रग-रग और रेशे में लाखों बुत सनम परशती शिर्क और कुफर करने के लिए रख लिए। चुनानचे शहादत के लिए आँख, नाक, कान, मुँह बिगारे हुए हजारों बुत वहा अभी तक मौजूद है। काबा को किसलिए साख्ता पर दाख्ता किया गया था और नासमझो ने फिर उसे क्या कुछ न समझा। उसे बजाए ताअत व एबादत हक करने के इसमें क्या-क्या कुछ कुफ्र व शिर्क नहीं किया। लेकिन हजरते हक या शारअ अलैहीस्सलाम ने मुहम्मद सल्ललाहो व अलैहे वसल्लम ने तो जिस तरह से तुम ने नफस ताजिया हुसैन अलैहीस्सलाम को तोड़-फोड़ डालने या उसको जला देने का हुक्म जारी फरमाया, न इस हर नफरत डाल कर फूंक देने ही का फरमान नाफिज किया और न उन वजहों कर रूसे शरालमरी समझा। और खाना काबा को ढा देने ही का हुक्म जारी फरमाया बल्कि बरखलाफ तुम्हारी तबाए और खसाएल और अकूत और फहुम के उन्हीं समझ के मवाफिक के फरमान खुद है। "अल अमालू बिन्नियात" बराए काबा नियत हक व नियत सैयदना इब्राहीम व सैयदना इस्माइल अलैहीस्सलाम

कोललखैराते बलहसनाते वल बरकाते समझ इस कदर साहब अजमत व जबरवत उसे समझा के अल्लाह ताअला से इसे अपने तौवाफ व ऐत्काफ व रूकू व सजदा के वास्ते अपना काबा कर देने के लिए दरखास्त करने लगे। हत्ता के अल्लाह ताअला से इसे अपना किब्ला व काबा तक गरदानवैया अपना किब्ला व काबा हो जाने का उस पर हुक्म ताअला जारी कर लिया।

(किताब जवाजे ताजिया)

ऐ जी इल्म, जबके हम जिक्र अल्ला के लिए बला कैद जिक्र इस्माए फरात अल्लाह व सफातुल्लाह व अफआल अल्लाह तीनों या तीनों में से चाहिए जो शै के लिए मिन जानिब अल्लाह मामूर किए गए हैं। और इस्म इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम मिस्मार व मजहर, इस्म सिफत अल्लाह अल्वी यकिनी व कतयी और ताजिया हुसैन अलैहीस्सलाम अपने बनाने या देखने या जुलूस मे शरीक होने वाले की कुर्बान या ख्याल बादील या रूह में जिक्र मुसम्मा व मजहर इस्म सिफत अल्लाह अल्वी इस्म इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम जारी कर देना है तो ताजिया ये आला जिक्र अल्लाह या आला जिक्र शैतान और आला जिक्र अल्लाह किस कायदा शरई का हसन अलामर व माजूरे जन्नत नहीं बल्कि शरअलार मोहददीश व बिदअत व जलालत मदखल दोजख है अगर आला जिक्र अल्लाह तेरे दिन में शरअलामर और मोहददीश और बिदअत और जलालत और दखलन्नार है तो तेरे ऐसे दिन को हम मोहत्तकीन का सौ करोड़ मर्तबा सलाम है। रही तुम्हारी बात के हम ताजिया को इसलिए मना करते हैं कि लोग ताजिया के रू-बरू खरे होकर इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम की तरफ मोतवज्जह होकर उनसे मुरादें मांगते हैं और इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम गैर अल्लाह है और गैरूल्लाह से मुराद

मांगना शिर्क अजिम है। "लाहौलअ व ला कुवतह इल्ला बिल्ला हिल अलअजिम।"

ऐ कठमुल्ला जब ही तुझे सूफिया कठमुल्ला और जाहीद खुश्क और ऐसे अकाएद वहाबियां कहते हैं। ऐ कूज फहम इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम जबकि मिस्माऐ व मजहर इस्म सिफत अल्लाह अलवला ठहरे तो किस कायदा से शरई व गैरूल्लाह ठहरे जिससे तुने और हर वहाबी, नजदी ने या बरैलवी व नबी व रसूलल्लाह सल्ललाहो व अलैहीए वसल्लम की तरफ मोतबज्जा बराए तलब मुराद होना या किसी वली या नबी रसूल की बेतरफे निदाए या वली अल्लाह रजीअल्लाह या नबी अल्लाह रजीअल्लाह या रसूलल्लाह रजि. या हुसैन रजि. अल्लाह अन्हा कहकर पुकारना शिर्क समझा और हजरात मजकूरे को काबिल हसाजते खाई न समझा ऐ ना समझ कोई नबी या रसूल बगैर तकमिल वलायत नवी या रसूल नहीं होता। यानी हर नबी व रसूल वली यकिनी व कतई होता है और वली तो वली होता है। वली मिसमा व मजहर इस्म सिफत अल्लाह अलवली होता है और इस्माए इलाहीया जाती है या सिफाती या इफआली और उन सबके लिए मुसम्मा व मजहर हुआ करता है। जैसे इस्म जाते अल्लाह (अल्लाह और रहमान और नुर) इस्म सिफते अल्लाह (रब और रहीम और रउफ) और इस्म फेले अल्लाह (रशिद और खालिक और बारी) तो ये तमामी ख्वाह जाती हूँ या सिफाती या इफआती इस्माए सहज है जो अपने लिए मुसम्मा व मजहर चाहते नहीं के तेरे इल्म व फज्ल के नजदीक ख्वाह इस्माए जाती हूँ या सिफाती या इफआली। अल्लाह रब, रशिद नुर अल्लाह है और मिस्माए व मजहर इस्म अल्लाह और रब और रशिद कोई चीजें दीगर गैरूल्लाह खुदा की कसम–

'गर हमें मकतब हमें मुल्ला

कारे इस्लाम खत्म खोबाहीद शुद''

ऐ कुज फहम ख्वाह अल्लाह के इस्माए जाती हूँ या सिफाती या इफआली इन सब मसीहात व मजाहीर की कसरत मौहुमा ही वहदत करार पाकर शैए वाहिद मुस्म्मा व मजहर हर इस्म अल्लाह अन्द इल्मूल शरिया व फज्ल मफहुम व माकूल है।

खुदा की कसम सादी शिराजी नहायत राशित गुफत अस्त।

''ऐ आलिम नादाँ तु दरें इल्मे गरूरी,

नजदीक बेमाबुद न अयी बल्के तु दौड़ी

दर खिल्वते दिल ताना कनी उल्फते तौहीद,

हक दाना शनाशी तवाजी कनजू कदवरी।''

लिल्लाह जल्द अज जल्द किसी शैख कामिल की सोहबत में पहुँच कर अपनी अपनी अकले ना कसीद और इल्म नारसा के नाहक से अलिम जाहिर किसी कामिल से बैत जल्द होकर नूह का तूफान है कश्ति अभी साहील में है वरना आखरत नजदीक है। (किताब जवाजे ताजिया)

मुखालफिन ताजिया

अकसर मुखालफिन ताजिया कहते हैं कि हिन्द में ताजियादारी तैमूर लंग ने जारी किया। इसका जवाब ये है कि तैमूर लंग तो एक लुटेरा बादशाह था। लुटेरों का कोई मजहब नहीं है वह अपनी मकसद बरआवरी के लिए जहाँ जब मौका देखता था वैसा कर लेता था। तैमूरलंग ने 1398 ई. में दिल्ली के सुल्तान मो तुगलक पर हमला किया। इल्जाम ये था कि हमने जिन बागी पठानों को समरकन्द, बल्ख, बुखारा और कन्धार से शहर बदर कर दिया था उन बागियों को हिन्द में क्यों पनाह दिया गया। गोया इसी कसूर पर दिल्ली को पन्दह दिनों तक लूटता रहा। तैमूर लंग न तो हिन्द का बादशाह था न तो दिल्ली के किसी हिस्सा पर हुकूमत कर सका और न दिल्ली के बाहर किसी इलाके में पहुँच सका। गौरतलब बात ये है कि हिन्द के बाहर गोशे कराची, कच्छ, कोंकण से आसाम, नागौर, कश्मीर, पेशावर से सिन्दरी, मालाबार तक और लक्षद्वीप, मालदीव, अण्डमान निकोबार तक ताजियादारी जारी है। फिर ये कैसे मुमकिन है कि सिर्फ पन्द्रह दिनों में तैमूरलंग ने छू मंतर से ताजियादारी कर दिया। जबकि उस जमाने में न रेल व तार था और न तैमूरलंग नबी या पैगम्बर था। और दूसरी बात ये कि तैमूरलंग के खानदान से औरंगजेब आलमगीर था जिसने 1609 ई. से 1707 ई. तकरीबन 50 साल तक हिन्द पर हुकूमत किया और उम्र भर ताजिया और मजार के खिलाफ जंग करता रहा। अगर ताजियादारी की इजरा पन्द्रह दिनों में तैमूर जैसा एक लुटेरा कर सकता है तो औरंगजेब आलमगीर जैसा एक बादशाह पचास साल में खत्म भी कर सकता था।

तीसरी बात–तैमूरलंग 1398 ई. में हिन्दुस्तान आया इससे पहले 1176 ई. में ख्वाजा गरीब नवाज आए तो हिन्द में ताजियादारी जारी

थी। और ख्वाजा गरीब नवाज से पहले 998 ई. में महमूद गजनबी से मूल्तान के हाकिम अबूल फतह लूदी पर हमला किया तो ताजियादाररी जारी थी। उनसे पहले 900 ई. में अबूल फतह लोदी के दादा परदादा नसीर बीन हमिद मुलतानी ताजियादार थे, जिनके खिलाफ फतवा निकाला था कि हमिद मुलतानी बातनी करामती है।

नोट–ये दोनों शब्द उस जमाने में ताजियादार के खिलाफ बोले जाते थे जैसे फी जमाना ताजियादारों को मूशरीक और बिदअती कहते हैं इसी तरह जमाना कदीम में ताजियादारों को बातनी और करामती कहते थे।

(किताब ताजिया की हकीकत)

सिन्ध के राजा दाहिर का वाक्या यूँ है के हसन बसरी के जमाने में हज्जाज बीन युसूफ के खौफ से जो मुस्लिम मुहाजरीन बगदाद और बसरा से भागकर सिन्ध में पनाह गजीन हुए थे। हज्जाज बीन युसूफ ने एक जहाज को भेजकर मुहाजिरों को वापस लाया जाए के वह मेरे खिलाफ कोई साजिश या बदनामी का परपोगन्डा न कर सकें। हज्जाज की फौज ने उन ताजियादार मुहाजिरों को गिरफ्तार करके अपने जहाज में बैठा लिया। तब उन मुहाजिरों ने राजा दाहिर से फरयाद की हमलोग रिफ्यूजी है। पनाह दी जाए वरना हमलोगों को वापस ले जाकर कत्ल कर दिया जाएगा। राजा दाहिर को रहम आ गया। उन मुहाजिरों को जहाज से उतार लिया और अपने पनाह में रख दिया। जबकि हज्जाज बिन युसूफ ने सुना तो मोहम्मद बिन कासिम को फौजी कमान्डर बनाकर सिन्ध पर हमला करने का आदेश दिया। मो. बिन कासिम ने 712 ई. में सिन्ध पर हमला करके राजा दाहिर को कत्ल कर दिया और उनके दो बेटियों को पकड़ कर ले गया और एलान ये किया कि राजा दाहिर ने हमारा जहाज लूट लिया ओर हमारे कैदियों को जहाज से उतार लिया था। (किताब हकिकत न. 6 पेज नं. 51)

मुखालफिन ताजिया कहते हैं कि हिन्द में ताजियादारी शियों की नकल है–

अकसर मुखालफिन ताजिया कहते हैं कि हिन्द में ताजियादारी शियों की नकल है और शिया ने रामलीला वगैरह से नकल किया है।

जवाब–जबकि मुसलमानों में 73 फिरकों नमूदार है और कोई एक दूसेरकी नकल नहीं करता है बल्कि बर अक्स जैसे सुन्नी अगर दाढ़ी रखते हैं और मूंछों मुण्डवाते हैं तो शिया अकसर मूंछें रखते हैं। और दाढ़ी मुड़वाते हैं। शिया नमाजे हाथ लटका कर सुन्नी नमाज में हाथ बांध कर पढ़ते हैं। पश जबकि शिया सुन्नी अकायद में ख्वाह-मरवाह एखतलाक है तो ये कहना क्योंकर दुरूस्त है कि ताजियादारी शियों की नक़ल है अलबत्ता ये कहना सही है कि सुन्नियों की नकल से शिया भी ताजियादारी करने लगे हैं। वरना शियों के यहाँ ताजियादारी नहीं थी। शिया हजरात तो अयाम मुहर्रम में सियाहपोशी और मातमी जुलूस निकालते हैं। ये ताजियादारी नहीं अलबत्ता सौगवारी है जिसको एजादारी भी कहा जाता है। लेकिन हमारे ताजियादारी में महज सौगवारी ही नहीं और सिर्फ अयाम मुहर्रम में ही नहीं हर रोज़ और हर वक्त राज हयात अलनबी का रौशन सबक और सामने और होश व हवास दुरूस्त रखकर यजिद के जुल्म व सितम का एहतजाज करते हैं। और हजरत इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम का अहसान मानते हैं कि ये अपनी शुजाअत से राज हयात अलनबी के सबक को बचा लिया।

(किताब-ताजिया की हकीकत)

मुखालफिन ताजिया का ये भी कहना है ताजियादारी में लोग शराब पीकर खेल तमाशा और झगड़ा फसाद करते हैं अलावह

इसके और भी कई बुराइयाँ होती है। इसलिए ताजिया को ही बन्द कर देना चाहिए।

जवाब–हाँ अगर कोई बुराइयाँ फैलती है तो उन बुराइयाँ को जरूर दूर करना चाहिए। इसका ये मतलब नहीं है कि शराब नोशी या बुराइयों के रोकथाम के लिए ताजियादारी ही को बन्द कर दिया जाए। क्योंकि कभी लोग शराब पीकर खाना काबा के गिर्द नंगे नाचते थे मगर इस कसूर में काबा नही गिरा दिया गया सिर्फ वह बुराई दूर की गयी। भला ये कोई अक्लमन्दी की बात होगी के अयाम हज में किसी हाजी की जेब कट जाए तो हज करना बन्द कर दिया जाए। मस्जिदों में नमाजी का जूता चोरी हो जाए तो नमाज पढ़ना बन्द कर दिया जाए। ऐसा करना तो सरासर बेवकूफी की बात होगी। इसी तरह ताजियादारी में किसी प्रकार की बुराई नजर आए जो वाकई बुराई है उसे जरूर दूर करना चाहिए मगर किसी भी हाल में ताजिया की तौहीन जेबा नहीं। (किताब ताजिया की हकीकत)

मुल्क अरब से ताजियादारों को बाहर-बदर किया गया तो बहुतेरे मजलूम मुहाजदीन हिन्द में आकर पनाह गुजीन हुए। (किताब-ताजिया की हकिकत न. 6 पृष्ठ-52)

इस्लाम की बुनियाद इनसाफ पर है और इस्लाम की बनावट इमान पर हे और ईमान की रूह मोहब्बत है और मोहब्बत का जहुर इख मे काम आना है जैसे देखिए हजरत ओबैस करनी की मोहब्बत वह अदना नमूना थाके जंग अहद में हजूर सल्लल्लाहों अलैहे वसल्लम पर दुख पड़ा तो मोहब्बत में अपने दाँतों को तोड़ डाला। ऐसी मोहब्बत आला नमूना है कि सारी उम्मते मोहम्मदया का सर कलम होने जा रहा है तो हजरत इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम ने अपना सर पेश करके इस्लाम का सर कटने से बचा लिया।

मौलाना ईदूलकजाए लखनवी

मौलाना ऐनूल कजाए लखनवी बहुत बड़े आलिम और पीर व मुर्शीद भी थे और पूरी उम्र ताजियादारी की मुखालफत करते रहे। एक ऐसा समय भी आ गया कि जईफी में अपने कोठे पर बैठे हुए थे। नीचे सड़क पर छोटे-छोटे बच्चे मिट्टी का ताजिया बतौर खिलौना बनाकर हसन-हुसैन, हसन हुसैन कहते हुए रास्ते से गुजर रहे थे। मौलाना ने बच्चों का वह खिलौना ताजिया देखा तो कोठे से नीचे कूद पड़े और बहालत गशी मौलाना भी हसन-हुसैन, हसन-हुसैन कह रहे थें मौलाना की ये कैफियत देखकर हुजूम लग गया। पूछा गया मौलाना साहब ये क्या हुआ। मौलाना ने फरमाया कुछ न पूछो क्या हुआ-जो हुआ सो हुआ। जब बच्चे वहाँ से खिलौना ताजिया लेकर अपने-अपने घर चले गए तो मौलाना को देखा गया के कोई अजू टूट-फूट तो नहीं गया है। मौलाना ने फरमाया मैं बिल्कुल सलामत हूँ। मेरा अकिदह टूट गया है। मैंने बच्चों के ताजिया के साथ देखा के इमाम हसन और इमाम हुसैन अलैही स्सलाम भी साथ-साथ चल रहे हैं। (किताब-ताजिया की हकिकत).

1170 ई. लगभग साढ़े आठ सौ साल पहले ताजिया शरीफ की रवायत मिलती है चुनांचे 52 मुहर्रमूल हराम को सैयदना हुजूर फरीदूद्दीन मसूदगंज शकर रजी अल्लाहो अन्हा के उर्स के मौके पर हुजूर मोइनुद्दीन अलमिल्लत वलदिन अजमेरी संजरी रजी अल्लाहो अन्हा का चाँदी का ताजिया शरीफ रखा हुआ है। जायरीन इसकी ज्यारत से फैजयाब होते हैं।

(दिन मोहम्मदी और ताजियादारी)

आमिर उस्मानी मदीर रसाला तजल्ली देवन्द

आमिर उस्मानी मदीर रसाला तजल्ली देवन्द थे जिन्होंने महमूद अब्बासी की मतुब (किताब खिलाफत माविया व यदिज) जिस किताब में यजिद को अमिरूल मोमेनिन और इमाम हुसैन को वाजिबूल कत्ल और बागी लिखा गया है जिसके बाद मौलवी आमिर उस्मानी ने कौन-सा मोअज्जजा हुसैन अलौहिस्सलाम का देखा के अपने अखबार तजल्ली देवबन्द दो पृष्ठों में अपना तौबा नामा प्रकाशित किया। अल्लाह व रसूल और तमाम.मुसलमानों से माअजरत (माफी) है की हजरत अली या अहले बैत अतहार से अदाबत रखकर कोई मुसलमान सरात मुस्कतीम का राहरू नहीं कहा सकता क्योंकि हुजूर के आँखों के तारों से किना और दुश्मनी रखने के मानी है उस पर पैगम्बर आजम की मोहब्बत का साया तक नहीं पड़ा है। (अजरसाला तजल्ली, देवबन्द, माह अक्टूबर 1971 ई.)

औरंगजेब आलमगीर

औरंगजेब आलमगीर बादशाह दिल्ली ताउम्र ताजिया व इल्म की मुखालफत करता रहा। बइत्तेफाक अब्दुल सुल्तान अब्दूल्लाह आगा मोहसीन खरासानी का जुलूस इल्म देखा। अब वही जाने कौन-सा माजरह देखा कि अपने बेटे मोअज्जम को खत लिखा के बेटा दुनिया तो दो रोजह तो किसी तरह गुजर जाएगी मगर याद रखो आकबत का सहारा हुसैन है।

माह रज्जाब 1115 हिजरी

और मरते वक्त वसियत लिखवाई के कर्बला मोअल्ला की मिट्टी मैयत को मल दिया जाए और कब्र में छिड़क दिया जाए। दरयाए असियान में गर्क गुनहगारों के लिए इमाम अलैहीस्सलाम की दरगाह सरापा रहमत व मगफरत में इल्तजा करने के सिवा और कोई

पनाह नहीं, आले रसूल की मोहब्बत अजर नबौवत है। (अज़ दकाए आलगीरी सिलसिला न. 105 पृष्ठ 132 से 1261)

कोई आलिम हो मुत्तकी कोई हुकुमराँ हो या बादशाह जब तक वह बरसर एकतदार रहता है अपना जेहनी मजहब मनवाने की कोशिश करता है मगर जब इल्म की गहराई में उतरता है और हकिकत समझ में आ जाता है तो अपने जेहन को मोअत्तल कर देता है और जैसे अपने जेहन को मोअत्तल कर देता है तो रूहानी हकीकत से दिल मनौवर होता है तब शिराजी का ये शेर समझ में आता है–

''आंलदाका दो बस्ती अली निस्त काफिरिस्त
गौ जाहीद जमाना गौ शैखराह बाश।''

के जो जहरत अली का दोस्त नहीं वह काफिर है ख्वाह वह जमाने का आलिम हो या कोई पीर मुर्शीद इसी शेर के साथ ही हुजूर सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की हदीश समझ में आ जाती है–

''मन कुन्तो मौला अली मौला''

(जिसका मौला में हूँ उसका मौला अली है)

क्या फरमाते हैं उल्माए दिन व मुफतियान शरह मतीन इस बारे में कि–

1. सैयदना हुजूर इमाम आली मकाम शहिदे आजम हजरत इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम के जश्न शहादत के एलान व तशहीर के लिए ताजिया बनाना, ढोल बजाना कैसा है?

2. ताजिया शरीफ के सामने हुजूर आली मकाम शहिदे आजम व दिगर अम्बेआए कराम व अउलियाए आजम व कुल मोमेनिन व

मोमेनात के लिए ऐसाल शवाब व फतेहा करना कैसा है। बाज लोग इसको मना करते हैं और ये कहते हैं कि ये ऐसा करने से पता नहीं लोग क्या समझेंगे।

3. ताजिया का एहतराम करना कैसा है?

4. ताजिया को दफन करना कैसा है?

मुफस्सिल जवाब फरमाए करम होगा–

गुलाम फरिदी टेयाल राजमहल जिला–साहेबगंज (झारखण्ड)

जवाब–(1) आमतौर पर मुसलमान अपने जुलूस कानफरेन्स शादी ब्याह के मौका पर झंडियों झालरों का एहतेमाम करते हैं और मुखतलिफ किस्म की सजावट करते हैं और उसका मकसद सिर्फ तशहीरी होती है ताकि आने जाने वाले समझ जाएं कि आज कोई तकरीब है। जिस मयार की सजावट होगी उसी मयार की शोहरत भी होगी। ये सजावट दरअसल परोपगन्डा ही है। एक शक्ल है आज इस तशहीर पर लाखों रुपया खर्च किया जाता है। जल्सागाहों को सजाया जाता है। दूर–दूर तक गेट लगाए जाते हैं। जब हम अपने जुलूस की शोहरत पब्लिसिटी के लिए ये तरीका इश्तमाल कर सकते हैं तो शहरादगान मुस्तफा सलल्ल्लाह व अलैहे व सल्लम के लिए उन तरीकों का इश्तेमाल मना होगा। ताजिया सैयदना हुजूर आलीमकाम शहिदे आजम हजरत इमाम हुसैन रजी अल्लाह अन्हा के जश्न शहादत की तशहीर जड़ें और महबूब तरीन तरीका है और इसलाफ कुबार से चला आ रहा है। आम तौर पर बुजूरगान दिन ने इसको कबूल व पसन्द फरमाया है और ताजियों की जियारत पूरे एहतेमाम और एहतराम के साथ फरमाई है। माजी करीब में सैयदना हुजूर वारीश अली शाह साहब देवा शरफ, सैयदना जुजूर अल्लाहो मियां पीलीभीती सैयदना हुजूर आला हजरत अशरफी मियां रजीउअल्लाहा

अन्हा किछौछा शरीफ का ताजियों का ज्यारत करना अदब व एहतराम के साथ मनकूल है। अकाबीर मारहरह शरीफ भी ताजियों की ज्यारत को जाया करते थे। सैयदाना हुजूर किबला आलम शैखूल अरब वल जअम मूरशीद मोहतराम शबिहए सैयदना हुजूर गौश आजम हजरत आल्लामा अलहाज शाह सैयद मोहम्मद अब्दूल रशीद मियां किबला मदजिल नुरानी सजजादह नशीं पीलीभीत शरीफ ने इरशाद फरमाया कि सैयदी मूरशीदी ताज अउलिया कुतुब जमां हजरत अल्लामा अलहाज शाह सैयद मो. अब्दुल कादिर मियां पीलीभीत रजीअल्लाहो अन्हा ताजियों की ज्यारत को तशरीफ ले जाया करते थे। और आज भी तमाम खानकाहों में ताजियों का एहतमाम होता है। उन खानखाहों में जिन्हें यजिदीयत की लू लग गयी है।

ऐलान के लिए भी ढोल ताशा वगैरह बिला शुभा जाएज हैं इसको मना करना, हराम बताना दिन में खुली मुदाखलत है और यजिदी जजबे का सामान तसकिन है और हुसैनयित को मिटाने की एक सोची समझी स्किम है। अहले सून्नत के नजदीक मातम नाजाएज व हराम हैं सीना को भी या ढोल ताशे से मातम ऐलान में जमीन व आसमान का फर्क हैं मुहर्रम शरीफ में जो ढोल बजाया जाता है वह इमाम हुसैन की शहादत की खुशी में नहीं बल्कि ऐलाने हुसैनियत है। ये ढोल ताशा न तो मातम हे और शादियां के तौर पर बजता है बल्कि ये तो सिर्फ ऐलान जश्न शहादत हुसैन है।

2. ताजिया के सामने और रूह मोमेनिन को ऐसाले शवाब करना दुरूश्त हे इसमें किसी किस्म की कबाहत नहीं है। जहाँ तक यजिदि फलसके की बात हे के लोग क्या समझेंगे, "तो फिर मजारात व कब्रों पर भी फातहा पढना छोड़ देंगे।" लोग पता नहीं क्या समझेंगे के मुसलमान मरते ही खुदा हो जाता है लोग उसे सफेद कपड़ा

पहना कर उसके सामने हाथ बाँध कर खड़े हो जाते हैं'' लोग पता नहीं क्या समझेंगे। अगर इन यजिदी फलसके को मान लिया जाए तो दिन से अमान उठ जाएगा। अमाल का दारोमदार नियतों पर होता है। हमारी नियत सिर्फ शोहदाए कर्बला और कुल मोमेनिन व मोमेनात के ऐसाल शवाब की है और उसमें सआदत ही सआदत है कबाहत का क्या सवाल।

3. जिस चिज को अल्लाह वालों से निसक्त हो जाती है वह मोअज्जम व महबूब हो ही जाती हैं ताजिया को सैयदना हुजूर इमाम आली मकाम हजरत हुसैन रजीअल्लाहो अन्हा से निसबत हो गयी के ये इनका सामान तशहीर है इनकी ताजीम करना ईमान वालों के लिए जरूरी हो जाता है। जो दड़िया, चादरें, महफिल मिलाद शरीफ में बिछाई जाती है इनका भी अदब किया जाता है और जो सफें मस्जिदों में बिछाई जाती है। उनकी भी ताजीम की जाती है। लेहाजा ताजिया को सैयदना हुजूर आली मकाम इमाम हुसैन रजी अल्लाहो अन्हा से निसबत हो गयी है। इसलिए इसे चुमना आंखों से लगाना अहले ईमान का तरीका हैं बुर्जूगजाने दिन ने ताजिया की ताजिम की है आप भी करें और यजिदी मसलक को कबूल न करें।

4. ताजिया को दफन करना ये भी ताजिम को एक शकल है जैसे कुरान करीम के अवराक जब बोसदिह हो जाते हैं तो उनकी गड्ढा खोदकर या पुरानी कब्र में दफन कर दिया जाता हैं ताकि उन अवाराक की बेहुरमती न हो, ताजिया को क्योंकि सैयदना हुजूर आलीमकाम हजरत इमाम हुसैन रजी अल्लाह अन्हा से निसबत हो गयी है लेहाजा उसको यूंही छोड़ेंगे तो उसकी बेहुरमती होगी। इसलिए उसको गड्ढ़ा खोदकर दफन कर देते हैं। ताकि ये नबीजादों से निसबत रखने वाले कागज और कम्चियों की बेहुरमती न हो इन मकामात का नाम जहाँ ताजिया दफन होते हैं कर्बला कहा जाता है।

उसमें भी शरई कोई कबाहत व मुमनात नहीं है। मुफती सैयद मोहम्मद इन्तेखाब हुसैन कादीरी मुरादाबाद शरीफ (किताब-ताजिया शरीफ का शरई हुकुम)

ऐलान के लिए ढोल बजाना अजरूए शरअ शरीफ जाएज है।

सैयदना हुजूर सूल्तान अलहिन्द ख्वाजा गरीब नवाज अजमेरी रजीअल्लाहो अन्हा के आस्ताना आलिया पर एक रज्जब को उर्स का एलान बजरिया ढोल ताशा होता है और ढोल ताशा भी बजाया जाता है। तमाम दुनिया का मुसलमान उस ऐलान को तकरीबन आठ सौ साल से सुन रहा है और देख रहा हैं सैयदना हुजूर मखदूम अलाउद्दीन साबीर पाक कलियरी रजीअल्लाहो अन्हा के यहाँ भी ऐलान उर्स शरीफ ढोल ताशे से ही होता है जो आज भी जारी व सारी हैं आइए हवाले की दुनिया में देखें कि ऐलान के लिए ढोल बजाना अजरूए शराई कैसा है।

जवाब-नौबत बजाना अगर तफाखीर के लिए हो तो नाजायज है और लोगों को मतनबा करना मकसूद हो नफखात सूर याद दिलाने के लिए तो तीन वक्तों में नौबत बजाने की इजाजत है बाद असर और बाद एशा बाद नसब शब के उन औकात मे नौबत को नफरव सूर से मोशाबहत है। ये नियत बहुत अच्छी है। अगर नौबत बजवाने वाले को भी उसका ध्यान और काश सुनने वालों को भी नौबत की आवाज सुन कर नफखात सूर याद आए मगर उस जमाने में ऐसे लोग कहाँ यहाँ नौबत है। मकसूद धूमधाम और शादी व्याह की रौनक व जीनत है।

(किताब-बहारे-शरियत जिल्द-16 पृष्ठ-110-11)

फतवा दारूल उलूम देवबन्द

हवाला–असल इस बात में ये है के अजान और नमाज के दरमयान लोगों को नमाज के लिए बुलाया या जमा करना (किसी मतरूफ जरीया से) मशाएरव और ऐमाने बजरूरत जाएज बल्की (1) मुसतहसीन करार दिया है जिसको इसतलाहा में तसवीयत कहते हैं क्योंकि मुसलमानों में रोज अफरोक गफलत उसकी मकतफी है कि बार-बार तम्बी की जाए और उस तम्बी के लिए मशाएख रहमल्लाह ने कोई खास तरीका मोकर्रर नहीं फरमाया बल्कि (2) हर जमाने और हर जगह के अर्फ पर छोर है के जो चीज लोगों में मतारूफ हो जाए वही हर जगह अमल में लाई जाए बीणा ऐसा जैसे रमजान मुबारक में इब्तदा और इन्तेहा सेहर के लिए हर शहर और कस्बे में अपने अर्फ के मोवाफीक मुखतलिंफ सूरतें अखतेयार की जाती है।

कहीं घण्टा बजाते हैं कहीं नगाड़ा व तबला कहीं गोला व तोप छोड़ी जाती है और अमूमन फुकहा ने इसको जायज व मुसतहसीन करार दिया है। अला आखिर (फतावह दारूल उलूम देववन्द जिल्द–अवल व दोएम सफा 70)

ऐलान के लिए दफ का बजाना हुकूम रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम है। दफ, तबला, नगारा, ढोल ये तमाम के तमाम ऐलान में दुरूस्त है। गुलामाने हुसैन उनके जरिये तशहीर जिक्र शहादत हुसैन करते हैं। माहौल को गर्माते हैं जो बला शुभा शवाब का काम है।

माह मोहर्रम शरीफ के पहले अशरे में ढोल ताशा यजिद पलिद खबिश से जोड़ना ये यजिदियों की सोची समझी स्किम का एक तारिक हिस्सा है और माह मोहर्रमूल हराम के पहले अशरे में ढोल

ताशा बजाना बड़ाए ऐलान जिक्र शहादत हुसैन हुसैनियों की सोची समझी अकिदतों से आरास्ता दिन व सून्नत की दूधिया चाँदनी में नहायी हुई स्किम का रौशन हिस्सा है। मुसलमान घरों में हों जहाँ अशरह मोहर्रम में ढोल ताशे की आवाज आयी आशिके हुसैनी बेताबाना इश्क व अकिदत का नजराना लिए ताजिया शरीफ देखने को घरों से बाहर आ जाते हैं। ताजिया शरीफ की ज्यारत करते हैं और आँसुओं का खराज़ अकिदत पेश करते हैं। (किताब–ताजिया शरीफ का शरई हुकूम)

हजरत सैयद शाह अब्दुल रज्जाक वांसवी रजी अल्लाहो अन्हा

ताजिये को कोई न समझे कि महज कागज और पट्टी का बना हुआ है बल्कि अरवाह मोकददसा शोहदाए कर्बला की तवज्जा खास हुई है। (करामत रजाकिया, दिन मोहम्मदी वा ताजियादारी, ताजिया शरियत का शरई हुकुम)

हजरत मौलाना सूफी अब्दुल रज्जाक बांसवी रहमतुल्लाह अलैहे का मामूल था कि जिस वक्त ताजिया उठाता तो आप नंगे पाँव तशरीफ लाते। (करामते रजकिया, पृष्ठ नं 65)

हजरत अल्लामा मौलाना सलामत अली देहलवी रहमतुल्लाह अलैह

हजरत अल्लामा मौलाना सलामत अली देहलवी तलमीज रशिद सैयदना हजरत शाह अब्दुल अजिज मोहददीश देहलवी रजीअल्लाहो अन्हा ने फरमाया खुदा का शुक्र है कि ताजियादारी आशार इस्लाम में है और एक आलम बहुत सी वजहो से बहरोज होता है और उससे दिनी फायदे होते हैं। (तबसरूल इर्मान दिन मोहम्मदी व ताजियदारी)।

हजरत मोहम्मद अब्दुल अलिम आसी गाजी पुरी रहमतुल्लाह अलैहीस्सलाम फरमाते हैं मेरे पीर मुर्शीद और वालिद के मरातीब है। सिर्फ इस कदर फर्क था कि वालिद माजिद से एक राज वक्त वसाल फाश हुआ। और पीर व मुर्शीद वकत वसाल जब्त कर ले गए। वाकया ये था कि शब्बे आशुरा मूहर्रम में जब आपकी हालत रवि हुई और इजा परेशान थें आपने फरमाया मेरी हालत की वजह से तुमलोग रस्म ताजियादारी में कोई ताखिर न करे और जिस तरह तमाम रसूमात अदा होती थी अदा करो और मुझको छोड़के जाओ। शब के आखिर हिस्सा में जब वक्त वसाल आया तो आपने फरमाया हजरत सैयदूल कौनेन अलैहीस्सलाम मअ कुल सहाबा और सैयदूल शेहदा और जुम्ला पिराने कराम मुझको अपने साथ ले जाने के लिए तशरीफ लाए हैं। अब मैं उनलोगों के साथ जाता हूँ कलमा तैयबा पढ़ा और रूह परवाज कर गयी। चेहरा मुबारक के सामने दिवार पर सफेद दायरा रौशनी का अन्धेरी रात में इस तरह नमूदार था के जैसे आफताब का अक्स पड़ता हो। जब सुबह होती और रौशनी बढ़ती गयी तो वह अक्स मिटता गया।

(किताब–दिवाने आसी अलमारूफ ऐने अलमारूफ पृष्ठ सं. 76)

हजरत मौलाना सैयद शाह नेयाज अहमद बरैलवी रजीअल्लाह अन्हा

आरिफ यगाना सैयदना हजरत मौलाना शाह नेयाज अहमद बरैलवी रजीअल्लाह अन्हा जो जलिलूल कदर बुर्जुगाने दिन में से है। आपका सिरत तैयबा ताजिया शरीफ से मुतल्लिक क्या दर्स देती है। शब आशुरह में दो बजे ताजियों की ज्यारत को तशरीफ ले जाते और पाँच और सात ताजियों की ज्यारत (दर्शन) करके वापिस आते।

आखिर उम्र में जब चलने की शक्ति न रही तो हजरत मुतफरिक बैठे थे, की सूरत नुरानी हजरत फातमा जहरा सैयदह रजिअल्लाह अन्हा की तशरीफ आवरी हुई और फरमाया के मियां आज हमारे बच्चों की ज्यारत (दर्शन) को न उठोगे। हजरत शाह नेयाज पे रक्ततारी हो गयी खुददाम को हुक्म हुआ कि हमको ले चले। अर्ज किया हुजूर चारपाई पर ले चले फरमाया नहीं पैदल ले चलो। चुनांचे खुददाम ने दोनों जानिब से बगलों का कान्धा दिया और हजरत ने पांच ताजियों की जयारत (दर्शन) की और आखिर उम्र तक आपका यही हाल रहा।

एक दफा सूरत के रहने वाले एक आलिमें दिन हजरत शाह नेयाज अहमदम बरैलवी के हमराह हुए हमेशा की तरह हजरत की ये आदत थी कि ताजिया के तख्त को हाथ लगाकर अपने मुँह और कल्ब पर फेरते थे। मगर इस मर्तबा हजरत ने ताजिया के तख्त को बोसा दिया इस पर मौलवी साहब के दिल पर ये ख्याल गुजरा कि हजरत ने ये क्या गजब किया। हजरत ने उसके खतरह कल्बि पर आगाह होकर उनसे ताजिया की तरफ देखने को कहा। मौलवी साहब ने देखा कि ताजिया के दोनों जानिब हजरत इमाम हसन और हुसैन अली नबीएना व अलैहेमुस्सलातो वससलाम तशरीफ रखते हैं। एक का लेबास सब्ज और दूसरे का लबास सूर्ख है। मौलवी साहब को ताब मौशाहेदा न हुआ गिर पड़े और उन पर बेहद रक्ततारी हुई। यहाँ तक कि लोटने लगें हजरत वहाँ से दूसरे ताजिये की तरफ तशरीफ ले गए।

(करामात नजामिया मखजासूनूल हिजाएन पृष्ठ 339 दिन मोहम्मदी और तजियादारी)

शैख आजम हजरत अल्लामा शाह सैयद इजहार अशरफ अशरफी किछौछा शरीफ

शैख आजम हजरत अल्लामा शाह सैयद इजहार अशरफ साहब अशरफी जिलानी सज्जादा नशीं किछौछा शरीफ ने अशरफी हाउस मुरादाबाद शरीफ में एक वाक्या बेयान फरमाया कि वली कामील सैयदना हजरत सैयद शाह शाहबाज भागलपुरी रजीअल्ला अन्हा ताजिया शरीफ के खिलाफ थे और भागलपुर में ताजियादारी धूम-धाम से होती थी। भागलपुर के अकशर सकिनान आपके ही मुरीद थे। दसवीं मुहर्रम थी एक मूरीद ने आकर अर्ज किया कि हुजूर ताजियादारी आपके मुरीदीन ही करते हैं और आप उसके मुखालिफ है। उसको हुक्म (आदेश) देकर बन्द करवा दीजिए। आपको जलाल (गुस्सा) आ गया और अपना लठ लेकर चल दिये कि आज सारे ताजियों को तोड़ डालूँगा। मगर जब ताजियों के करीब पहुँचे तो आपके आंखों से सागर छलकने लगा और आप हाथ बांध कर खड़े हो गए और आपने भी ताजियों को कन्धा दिया। जब ताजियों का जूलुस गुजर गया तो उसी मुरीद ने अर्ज किया के आप ताजियों को तोड़ने गए थे मगर आप पैकर अदब व एहतराम बनकर ताजियों की दर्शन में मसरूफ हो गए तो सैयदना हजरत शहबाज भागलपुरी ने फरमाया के मैं तो अपने प्रोग्राम से ही गया था। मगर मैं क्या करूँ कि मैंने देखा कि सैयदना सैयदूल शाहदाए इमाम आली मकाम शहिदे आजम हुजूर इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम जुलूस ताजिया के साथ खुद चल रहे हैं। जब दादा जान ने कान्धा दे दिया और मैंने फैसला कर लिया कि कभी भी मुखालफत न करूँगा। (नदाए अहले सून्नत विकली 12 फरवरी 2003)

हुजूर सैयद हाफिज वारिश अली शाह देवा शरीफ

दूनियाऐ रूहानियत को अबकरी शखशियत आलम पनाह सैयदना हुजूर हाफिज वारिश अली शाह देवा शरीफ रजीअल्लाहो अन्हा का इरशाद अमल भी मोलाहेजा फरमाएं खबरदार ताजिये को कोई ये न समझे कि खाली कागबज पट्टी, बांस की कमांचियों का ढाँचा है। मलहुज रहे कि अरवाह कुदसिया सैयदूल शोहदाए अली नबीएना व अलैहीस्सलातो व सल्लाम और जूमला शोहदाए कर्बला इस तरह मतवज्जा होती है वारीश पाक आलम पनाह माह मोहर्रम में ताजिया खानों में जाते थे। जब ताजियादार ताजिया को लेकर चले जाते थे तब हुजूर वारीशपाक हुजुरे के अन्दर तशरीफ लाते थे। ताजियों को देखते वक्त चेहरे अनवर की अजीब हालत मोशाहदा में आती थी और देर तक हुजूर अनवर आलम सकुत में रहते थे। अशरा मोहर्रम और चहल्लूम के दिन आस्ताना आली पर सबील रखी जाती थी। ग्रह मोहर्रम तक आप मरसिया भी सुनते थे और अहले सून्नत कराम की मोहब्बत और शुजाअत व बहादुरी के तजकरे समात फरमाते थे।

(मिशकाते हकानिया पृष्ठ–110)

हजरत अल्लामा सलामत अली देहलवी रहमतुल्लाह अलैहे शागिर्द सैयद हजरत शाह अब्दूल अजीज देहलवी रहमतुल्लाह अलैह फरमाते हैं कि खुदा का शुक्र है ताजियादारी आशार इस्लाम में है और एक आलम बहुत वजहों से बहरोज होता है और उससे दिनी फायदे हैं।

(तबसिरूल ईमान दिन मोहम्मदी और ताजियादारी)

हुजूर सदर आला फाजिल मोहम्मद नइमुद्दीन मुरादाबादी

इल्म व आगही के आफताब सैयदना हुजूर सदर आला फाजिल इमाम सैयद मोहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी रजी अल्लाह अन्हा ताजिया शरीफ बनाने में पाबन्दी से चन्दा दिया करते थे और आप ही के मुरीदीन व मुअतकेदीन व मोतवसलीन अहले मोहल्ला आपके माली ताउन से ताजिया शरीफ बनाते थे। गुजिश्ता साल एक तकरीब के मौका पर मुझ फकिर कदिरी ने बकियतुल सल्फ हजरत मौलाना सैयद इजहारूददीन साहब नईमी उर्फ हनफी मियां सजजादा नशी आस्ताने आलिया नईमिया व खल्फ असगर हुजूर सदर आला फजिल से दरियाफत किया के क्या हुजूर सदर आला फाजिल ताजिया बनाने में चन्दा देकर ताजियाशाजी में शरीक होते थे। आपने फरमाया मेरे वालिद माजिद (हुजूर सदर आला फाजिल) हमेशा ताजिया शरीफ बनवाने में चन्दा देते थे और आपने अपनी पूरी जिन्दगी में कभी ताजिया की मुखालफत न की। (नेदाए अहले सून्नत विकली, 21 फरवरी, 2003 ई. किताब, ताजिया शरीफ का शरई हुकम)।

ताजिया शरीफ बनाने वाले की राहों में ऐड़ा-गैड़ा नहीं बल्कि इल्म का आफताब व इरफान का महताब किरणें और शोआँए विखेरता नजर आ रहा है। अपने नकद अमल से ताजिया के जवाजों इस्तहवात पर महर तसदिक शब्त कर रहा है। अब इस ताजिया शरीफ के हम होने को क्या कसर बाकी है। फकीर कादिरी ने जहाँ तक महसूस किया है कि ताजियाशरीफ के मुखालफत में यहूदों व नसारा की साजिश कार फरमा है। चूँकि यहोदों नसारा किसी भी ऐसे काम को कबूल व पसन्द नहीं करते जिससे इस्लामी शान व

शौकत का मोजाहेरह हो और मुसलमानों को दिनी जज्बात में उभार आए। जज्बऐ जेहाद में जवानी व बेदारी पैदा हो। नवी और आले नवी और असहाब नबी का वकार दिलों में रासिख हो। वह इसके खिलाफ प्लानिंग करते ही रहते हैं। और अपने मनहुस मनसूबों के लिए उल्माए सौ को आला एकार बनाते हैं और ये फारमूला शाबीत करते हैं कि ये हैं शिर्क व बिदअत है फिसक व फिजूर है और मुसलमानों को अमूर खेर से रोकते हैं । और ये भी भूल जाते हैं कि हमारे हजरात असलाफ का किरदार किया है और उन्होंने किस सरात मुसतकीम पर चलकर मंजिल मकसूद को पाया है।

मकनपुर शरीफ, अजमेर शरीफ, कलयर शरीफ, देहली शरीफ, किछोछा शरीफ मारहरा शरीफ,देवा शरीफ, पीलीभीत शरीफ, और मुरादाबाद शरीफ तमाम ही खानकाहों में ताजियादारी पूरी अकिदत व नेयाजमन्दी के साथ जारी व सारी है। बाज खानकहें ऐसी भी है जिन्हें यजिदी लू लग गयी है और वे ताजियादारी के सआदत से महरूम है। कुछ खानकाहें जो ताजियाशरीफ की मुखालफत में सर गर्म अमल है और ताजिया के खिलाफ बगावत बुलन्द किए हुए है। हुसैनी निस्बत रखने वालों में ताजिया शरीफ की ताजीम बिला शुबहा रूहे ईमान है बल्कि इश्क हुसैनी की पहचान है और अजमत हुसैनी रखने वाले ताजिया शरीफ की वही ताजीम करेगा जिसका दिल जलवहगाहे खयिशत रब होगा। जो दिल का मोत्तकी होगा, जिसका दिल मोत्तगी होगा और जिसका दिल बलाए यजिदियत में गिरफ्तार होगा इसका अपनी यजिदी टेकिनक होगी और यजिदी सोच होगी वह उसी पर नंगा नाच करेगा। ताजिया शरीफ ईमान वालों के निगाह में बहुत ही मोहतरम व मोअज्जम हैं ईमान वालों में भी दो जमाते हैं–एक आम व दूसरे खास। ताजिया शरीफ हर दो जमातो में मोहतरम व मोअज्जम है और दोनों जमाते ने ताजिया शरीफ का

इन्तजाम व एहतेमाम किया है। ताजियाशरीफ आज की कोई नई बात नहीं है, सदियों साल बात पुरानी है।

1170 ई. में तकरीबन साढ़े आठ सौ साल पहले ताजिया शरीफ की रवायत मिलती है। चुनांचे 25 मुहर्रम शरीफ को सैयदना हुजूर बाबा फरीदुददीन मसउदगंज शकर रजी अल्लाह व अन्हा के उर्स के मुबारक मौका पर हुजूर मोईनुददीनूल मिल्लत वलदिन अजमेरी सन्जरी रजी अल्लाह अन्हा का चान्दी का ताजिया शरीफ रखा हुआ है। जायरीन इसकी ज्यारत से फैजयाब होते हैं। (दिन मोहम्मदी और ताजियादारी), (किताब-ताजिया शरीफ का शरई हुकम)।

हुजूर अशरफूल अउलिया और ताजिया शरीफ

हुजूर अशरपूल औलिया सैयदी मूरशीदी व आकाई हुजूर सैयद शाह मुजतबा अशरफ अशरफी अल जिलानी रजीअलहो अन्हा किछौछा मोकददशा राकिब अल हरूफ के गरीब खाना पर मौजा शम्भूपट्टी, हाजीपुर, वैशाली, बिहार तशरीफ लाए। शाम का वक्त था। हुजूर किबला सरनिगों होकर महो तजल्लियात में गुम थें आपके चेहरे अनवर से अनवार साफ जाहीर हो रहा था। गुलाम ने अपनी सकूत लब को बड़ी मुश्किल से जुम्बिश दी और मोअददब होकर कहा हुजूर ताजिया शरीफ के बारे में आपका क्या हुक्म है। आपकी निगाहें नाज उठी और जवाब अनायत हुआ मुझसे क्या पूछते हो उनलोगों से पूछो जो नहीं करते हैं। आपका ये आरफाना जवाब सूनकर दिल मेरा मूतमईन हुआ और खुश हो गया और मैं खामोश होकर अपनी जगह बैठ गया।

हुजूर शब्बिर मियाँ और ताजिया शरीफ

आजमगढ़ के एक अजिम बुजुर्ग हुजूर शब्बिर मियाँ रहमतुल्लाह अलैहे से एक मोलवी साहब मुरीद हुए। दौरान गुफतगु में पीर फकिर हुजूर शब्बिर मियां रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुरीद मोलवी साहब को मुखातीब करके फरमाया–सुनो जी मुहर्रमलहराम के महीने में योम आशूरह के दिन जरूर आना। मोलवी साहब अपने पीर की बात को दिल की तख्ती पर नक्श कर लिया और आने वाले दिन का इन्तजार बड़ी बेसबरी से करने लगे। मुहर्रमूलहराम का महीना आया तो यौम आशुरह के दिन पीर साहब के यहाँ तशरीफ लाए। ज्योंहि उनकी निगाह पीर पर पड़ती है तो हैरान व परेशान हो गए और अपनी निगाह पीर साहब की जानिब से फेर ली क्योंकि पीर साहब उस वक्त ताजिया शरीफ को बोसा दे रहे थे और मोलवी साहब के दिल ही दिल में बात गूंज रही थी के पीर साहब भी बिदअत का काम करते हैं। पीर साहब ने खसरह कल्बि पर आगाह होकर मौलवी से फरमाया–बगौर ताजिया शरीफ को देखो। पीर का हुक्म पाते ही ताजिया शरीफ को देखा और देखते ही आलम गशी में जमीन पर गिर पड़े और घंटे बेहोशी में तड़पते रहे और जब होश में आए तो या हुसैन या हुसैन का नारा बुलन्द करने लगे। पीर साहब ने मौलवी साहब से पूछा–आपने ताजिये में क्या देखा–हुजूर जो देखा हक देखा। जबान इस मंजर को बयान करने से कासिर है। राकिम अल हरूफ एक मूरीद खास ने ये वाक्या हुजूर गुल अशरफ अशरफी अल जिलानी किछौछा मुकददशा की जबानी तारीख 29 मूहर्रमूल हराम 1428 हिजरी बरोज एतवार 9 बजे दिन में सुनाया था।

ताजिया शरीफ किबला व काबा की तरफ झुका

हजरत सैयद मोजाहीद अशरफ अशरफी अलजिलानी अशरफ चक सिमरी बख्तयारपुर सहरसा, मौलाना दाउद हुसैन मिसबाही अशरफी रहमतुल्लाह अलैह, सहरसा, सदर अल मोदररीसीन मरकजी दारूल उलूम खानकाहे आमदीया मंगल तालाब पटना सिटी बिहार और राकिमूल हरूफ यौम आशुरह की शब ने ख्वाजा कलाँ इमाम बारह पर बाबुल जीद अली को दावत पर हाजिर हुआ। बाद नमाज इशा जिक्र शोहदाए कर्बला की महफिल मोनअक्किद हुई। ख्वाजा कलाँ का ये इमाम बारह लम्बे सड़क तकरीबन दस से बारह फीट की बलिन्द पर हैं तीन फीट ऊँचा और दो फीट चौड़ा एक खूबसूरत ताजिया शरीफ इमाम बारह पर रखा हुआ है। ताजियाशरीफ की दक्षिण जानिब उल्माए कराम व शोराए आजम के क्याम व खताबत का एहतमाम है। एक के बाद दिगरे शोहदाए कर्बल इमाम आल मुकाम हजरत हुसैन अलैहीस्सलाम की शहादत का जिक्र जमील और मनाकीब अहले बैत इजहार का तजकरा सूनकर अपने कल्ब को मनौवर व मोज्ल्ला फरमा रहे हैं। तकरीरी प्रोग्राम खतम होते ही सलातों सलाम के लिए अहले अकिदत खड़े हो गए। सैयद मोजाहीदे अशरफ अशरफी जिलानी साहब सलातो सलाम पढ़ने लगे। आपके नाजों का सदका, कर्बला वालों का सदका, खून में तर पैरहन का सदका, इस मिसरे पर ताजिया शरीफ किबला व काबा की तरफ झुक गया। ये मंजर देखकर सैयद मोजाहीद अशरफ साहब की जबान बन्द हो गयी। और सामईन हजरात पे भी एक वज्द की कैफियत पैदा हुई। थोड़ी देर सब लोग सकते में पड़ गए। लब खामोश को जुम्बिश दी फिर राकिम अल हरूफ ने मिसरा को तकरार जैसे शुरू की ताजिया शरीफ पहले की तरह ताजिम हुसैन

अलैहीस्सलाम में खड़ा हो गय। जबकि न कोई हवा का झोंका न तूफान बिल्कुल फिजा साकित थी।

अल्लाह-अल्लाह ये मंजर चश्मदीद लोगों ने देखा तो बेसाखता कुरान मोकददस की आयत मोकददस अहले अकिदत की जबान पर आ गया। शहीदों को मूर्दा मत कहो वह जिन्दा है। अल्लाह ताला का फजल हुआ के शोहदाए कर्बला इमाम आली मकाम हजरत हुसैन पाक की अजमत व करामत का मोशाहेदा अहले अकिदत ने अपने सर की निगाहों से देखा। इसी मोशाहदत की बुनियाद पर अवलिया अल्लाह ने ताजिया शरीफ के मुतल्लिक फरमाया-खबरदार ताजिये को कोई ये न समझे कि खाली कागज की पट्टी और बांस की कमांचियों का ढांचा है के अरवाह कुददूसिया सैयदूल शोहदाए अली नबीएना अलैहीस्सलातो वस्सलाम और जुमला शोहदाए कर्बला इस तरफ मोतवज्जा होती है-खबरदार-खबरदार-खबरदार-खबरदार।

यौम आशुरह के दिन खिचड़ा का सुर्ख होना

यौम आशुरह मोहर्रमूल हराम की दसवीं तारीख 1427 हिजरी बाद नमाज असर अकिदत मन्दों की पेशानी पर इमाम बारह में रखी हुई मिट्टी फैज रूहानी के लिए लगायी जाती है। राकिमूल हरूफ के पड़ोसी का लड़का इमामबारह में रखी हुई मिट्टी लाकर अपनी माँ के पेशानी पर लगा दिया। उस वक्त उसकी माँ फातहा के लिए खिचड़ा बना रही थी। खिचड़ा बनाते वक्त वह झुककर खिचड़ा को चम्मच से चलाने लगी। पेशानी पर लगी इमाम बारह की मिट्टी देकची में गिर गयी। मिट्टी गिरते ही देग का खिचड़ा सूर्ख हो गया। ये मंजर देखते ही घर की औरतें परेशान हो गई। और राकिमूल हरूफ को जल्दी से बुलाने का हुक्म हुआ। मैंने अपेन सर की निगाहों से देखा कि देकची का खिचड़ा बिल्कुल सूर्ख यानी खून से

आलूद है। ये बात जंगल में आग की तरह महल्ला में फैल गयी और हजारों लोगों ने अपने सर की निगाहों से इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम से निसबत रखने वाली मिट्टी की करामत को देखा और हर साल मुहर्रमूल हराम के महिने में इसका तजकरा होता रहता है।

तरीका ताजियादारी ख्वाजा गरीब नवाज की बारगाह में

अजमेर शरीफ मे ताजिया शरीफ के बनाने का एहतमाम जिल हीज्जा की 11 तारीख से शुरू हो जाता है। खुददाम ख्वाजा गरीब नवाज बड़े अदब व एहतराम व जौक व शौक के साथ हुसैन अलैहीस्सलाम की मोहब्बत में यादगारें हुसैन अलैहीस्सलाम मनाने के लिए ताजिया शरीफ की शबिह बनाने में लग जाते हैं। और खादिम का काम अलग-अलग काम को बड़ी मोहब्बत व दयानत के साथ अन्जाम देते हैं। मूर्हरमूल हराम की पहली से 7 तारीख तक सजावट का काम होता है। ताजिया शरीफ को नूर व निकहत से मजीन किया जाता है। ताजिया शरीफ की मोकम्मल शबिह हद्दे ख्वाजा गरीब नवाज में ही बनती है जिस रास्ते से ताजिया शरीफ को इमाम बारह पर रखने के लाया जाता है। पहले से ही इस रास्ते पर कालीन बिछा दी जाती है। 9-10 मूहर्रमूल हराम के दिन रोजा के इफतार का इन्तजाम बारगाहे ख्वाजा की कमीटी की जानिब से होता है। ये इफतार का मंजर बड़ा ही लुत्फ होता है। 10 मोहर्रमूल हराम की शब में ताजिया शरीफ इशा की नमाज के बाद या हुसैन या हुसैन की बलन्द आवाज के साथ खुददाम ख्वाजा गरीब नवाज शहादत नामा व मनाकीब अहले बैत अतहार यके बाद दिगरे पढ़ते हुए अपने अश्क बार आंखों से ताजिया शरीफ की ज्यारत करते और नजरानए मोहब्बत पेश करते रहते हैं धीरे-धीरे ये नुरानी काफला

इशा के नमाज के बाद चलकर फजर की अजान से पहले इमाम बारह पहुंचता है और इमाम बारह पर ताजिया शरीफ रख दिया जाता है। फजर की नमाज के बाद जायरीन हजरात ज्यारत ताजिया शरीफ के लिए सैलाब की तरह पहुँचते हैं और अपनी अपनी मन्नतें माँगते हैं और नजर गरीब नवाज बच्चे, जवान, बूढ़े सब हरे लिबास में मबलूस रहते हैं। ये हसनी रंग चिश्ति जजबात में हर फर्द यादगारे हुसैन से अपने कल्ब को ताजगी व सरूर में बेखुद रहते हैं तारिफ की बात ये है कि न किसी के हाथ में लाठी है न डण्डा है न कोई खंजर है बिल्कुल खाली हाथ है और लबों पर सिर्फ या हुसैन इब्न अली का नारा है, निगाहों से आंसूओं के सैलाब देखने को मिलते हैं। आशूरह का दिन गुजार कर ग्यारहवीं की शव में बाद नमाज इशा ताजिया शरीफ को इमामबारह से उठाया जाता है। आशूरह की शब में जो मंजर देखने को मिला था। वही मंजर ग्यारहवीं की शब में या हुसैन या हुसैन अश्क बार आँखों से देखने को मिलता है। ताजिया शरीफ को बारगाहे ख्वाजा गरीब नवाज मे लाया जाता है और बावलीशरीफ एक कशारा हौज है जो तकरीबन 25 फीट लम्बा और 20 फीट चौड़ा और करीब 20 फीट गहरा है। मोहर्रमूल हराम की पहली तारीख को ही इस हौज को साफ कर दिया जाता है। गुजीशता साल की तमाम लकड़ियों को निकालकर हौज के बगल में दफन कर दिया जाता है। साथ ही खाली हौज को रंग व पेंट से हर साल मजीन व खूबसूरत किया जाता है। ताजिया शरीफ गर्क आब करने से पहले खाली हौज को अर्क गुलाब, अर्क केवड़ा, अतर मुश्क अम्बर वगैरह से लबरेज कर दिया जाता है। ग्यारहवें शब को नमाज फजर से पहले ताजिया शरीफ को इस हौज में सैयराब करके उपर से परदा से ढक दिया जाता है। इस तरह बारगाहे ख्वाजा गरीब नवाज में ताजिया शरीफ की इब्तदा व इन्तहा होती है।

लेहाजा हम अपने सून्नी हुसैनी भाइयों से इल्तजा करता हूँ कि जिस तरह बारगाहे ख्वाजा गरीब नवाज में ताजिया शरीफ का अमल होता है। इस तरह 8 मोहर्रमूल हराम को अपनी हाजरी बारगाहे ख्वाजा गरीब नवाज में देकर अपने सर की निगाहों से देखें के हुजूर ख्वाजा गरीब नवाज की बारगाह मुकददस में किस तरह ताजियादारी होती है और उनके तरीके पर चलकर हमलोग भी ताजियादारी करें साथ ही 27 मूहर्रमूल हराम को ख्वाजा गरीब-नवाज की बारगाह मे चाँदी का ताजिया शरीफ की ज्यारत करायी जाती है। ये ताजिया शरीफ हुजूर बाबा फरीदूदीन गंज शकर रहमतुल्लाह अलैहे के चिल्ला खाना में है। 25 मूहर्रमूल हराम को सैयदना हूजूर बाबा फरीदुददीन मसउद गंज शकर रजी अल्लाहो अन्हा के उर्स मुबारक के मौका पर हुजूर बाबा साहब का चिल्ला खाना खुलता है जिसमें सैयद सुल्तानूल हिन्द गरीब नवाज हुजूर मोइनुल मिल्लत वलदिन अजमेरी रजीअल्लाह अन्हो का चान्दी का ताजिया शरीफ रखा हुआ है। जायरीन उसकी ज्यारत से फैजायाब होते हैं।

(दिन मोहम्मदी और ताजियादारी)

हर सुन्नी मुसलमान सोचे कि हर घर में महफिल मिलाद शरीफ हुई है। हर मोहल्ले और हर शहर में दिनी जलसे होते हें। उनमें घर की दरियां और चान्दनियाँ बिछाई जाती है। घर की चौकियो और तख्त बिछाए जाते हैं। या फिर किराये का सामान मंगाए जाते हैं और ये किराए का सामान दिनी जलसे से पहले भी किसी सवांग, सरकस, नाच, कथा व कीर्तन में इस्तेमाल होता है और आज के बाद भी इन मजकूरह कामों में इस्तेमाल होगा और यही हाल है लाईट और सजावट के सामान का कि वह भी कल कहाँ-कहाँ इस्तमाल हुआ है। और फिर कल कहाँ-कहाँ इस्तमाल होगा। मगर

इन सब को महफिल रसूल, बज्म, रसूल मेम्बर रसूल में कोई मसलमान सर बरहना भी वहाँ न जाएगा कि बज्म रसूल है कोई दाढ़ी मुण्डा मेम्बर रसूल पर रूए शरम नहीं बैठ सकता के वे मेम्बर रसूल हैं चन्द घंटों के लिए इस सामान को महफिल जिक्र रसूल में लगाया तो आदाब व एहतराम की बहतात व बरसात देखी जा रही है। इन दरी, चादरों, झालड़ों, झंडियों तख्त और चौकियों को जिक्र रसूल से थोड़ी देर के लिए निस्बत हो गयी है के ये सारा-सारा का सामान यहाँ से उखड़ कर सूंग या कीर्तन या नाच गाने की सभा में चला जाए मगर वक्ती निस्बत ने इस किराये के सामान को अजमते देदे के ऐसा कोई इस महफिल में बिड़ी-सिगरेट नहीं पी सकता के ये वज्म रसूल है। मोहल्ले का कुत्ता जो दिन भर घूमता है अब अगर आ जाए तो बड़ी तेजी के साथ उसको भगाया जाएगा के ये बज्म रसूल है कुत्ता कैसे आ गया हैं ये वक्ती निस्बत की जलवागिरी है के घर की चादरों और चहारदीवारियों की ताजिम की जा रही है। किराये पर आये हुए डेकोरेशन की सामान की ताजिम की जा रही है। चन्द मिनटों के बाद टाय-टांय फिस हो जाएगी।

मगर ताजिया शरीफ तो बनाया ही गया है प्रचार हुसैनी के लिए। इसका तो मकसद ही तशहीर हुसैनी है वह न तो पहले ही गन्दी जगहों पर इस्तमाल हुआ है और न ही बाद में किसी गन्दी जगह इस्तमाल होगा इस हुसैनी निस्बत रखने वाले ताजिया शरीफ की ताजिम वला शुबहा रूह इमान है बल्कि इश्क हुसैनी की पहचान है और अजिम निस्बत हुसैनी रखने वाले ताजिया शरीफ की वही ताजिम करेगा जिसका दिल जलवहगाह खशियत रब होगा। जो दिल का मोत्तकी होगा, जिसका दिल मुत्तकी होगा जो दिल का मोत्तकी होगा जिसका दिल मुत्तकी होगा और जिसका दिल बलाए यजिदियत में गिरफ्तार होगा। उसकी अपनी यजिदी टेकनिक होगी और यजिदी

सोच होगी। वह उसी पर नंगा नाच करेगा।

(किताब–ताजिया शरीफ का शरई हुकुम)

हजरत अबूहुरैरा रजीअल्लाहो अनहा ने फरमाया के मैंने हुजूर सल्लल्हाहों व अलैहे वसल्ल्म से इल्म के दो जर्फ सीख लिए। एक तो बयान कर दिया। काश इल्म का वह दूसरा जर्फ ब्यान करूं तो मुस्लिम उल्मा मुझे कत्ल कर देने का फतवा दे देंगे। उल्मा का कौल है कि वह दूसरा जर्फ इल्म तसौउफ है जो सुनने में कुफ्र मालूम पड़ता है।

(अज हदीश बुखारी, जिल्द अव्व्ल, पृष्ठ–137)

हदीश पाक की रौशनी में मनाशाए रसूल सल्लल्लाह व अलैहे व सल्लम

1. अभी हुसैन मेरी गोद में है। शहादत की खबर जिबरील से सुनकर अश्क बार हूँ। कल मेरी उम्मत मेरे हुसैन की ताजियत में ताजिया शरीफ को देखकर अश्क बार होंगे।

2. आज मैं हुसैन को सूंघता हूँ तो जन्नत की खुशबू मिलती है।

कल मेरी उम्मत को मेरे हुसैन की खुशबू ताजिया शरीफ में रखी हुई मिट्टी से मिलेगी।

3. आज मैं अपने कान्धे पर चढ़ाकर हुसैन को घुमा रहा हूँ। कल मेरी उम्मत हुसैन की ताजिय़त में ताजिया शरीफ को अपने कान्धे पर रख कर घुमाएंगे।

4. आज मैं हालते नमाज में हुसैन के लिए सजदा दराज कर रहा हूँ।

कल मेरी उम्मत अकदिते हुसैन में ताजियत और ताजिया शरीफ को दराज करेंगे।

5. आज मैं हुसैन के चेहरए अनवर को देखकर जुमा का खुतबा पढ़ रहा हूँ।

कल मेरी उम्मत मेरे हुसैन की ताजियत में ताजिया शरीफ को देखकर शहादत का खुतबा पढ़ेंगे। सूफिवाद के लिए हजरत मोहम्मद सल्ललल्लाहो व अलैहे वसल्लम का फरमान ही सबसे बड़ा फरमान है जो इनसानियत के लिए रहमत है। अब फरमाने रसूल के अलावा मनशाए रसूल है और मनशा और फरमान में फर्क होता है। दोनों एक नहीं। फरमान खुल्लम खुल्ला कहा जाता है लेकिन मनशा कहा नहीं जाता मुफस्सिरीन ने लिखा है कि मनशा सुनने में कुफ्र मालूम होता है इसलिए मनशा को हमेशा पोशिदा रखा जाता है।

(किताब हकीकत नम्बर 6 पृष्ठ 21)

इस्लाम और हिन्दुस्तानी अवाम पर तसौउफ का बहुत बड़ा असर है। सूफियों ने इस बर अजीम में बहुत ज्यादह कामयाबी हासिल की। सूफी बुजुर्गों में जमाने के मुताबिक ख्वाजा मोइनुददीन चिश्ति, ख्वाजा कुतुबुददीन बख्तयार काकी, ख्वाजा फरीदुददीन गंज शकर, ख्वाजा निजामुददीन महबूब इलाही वगैरह इनसानियत के अजिम अलमबरदारों में गुजरे हैं जिनके पिराव में हर मजहब (धर्म के लोग थे। जिन्होंने जुल्म व असतबदाद के खिलाफ हमेशा आवाज उठायी। हिन्दूस्तान में इस्लाम की अशाअत अवामी पैमाने पर सूफियों के तरीकत की मरहुन मिन्नत है। ये बुजुर्गाने दिन इनसानियत के बेहरीन नमूने के तौर पर पेश किये जा सकते हैं। सूफियों ने अदायन और जिददत पसन्दो अमिर व गरीब और मुखतलिफ फिरकों के दरमयान खलिज को पाट दिया है और मुखतलिफ (विभिन्न) फिर्कों की बाहमी दुश्मनी को भी खत्म किया और इनसानियत को नमूना बता कर रूहानियत का पैगाम सुनाया।

सूफियों ने मोहब्बत को मखलूक का इजहार और खुदा का मजहर बनाकर पेश किया।

(अज कलम प्रोफेसर रशिददूदीन खान एम.पी.)

उस्मानिया युनिवर्सिटी, दक्कन

माखूज डॉक्टर सिबला विक्ली ऑफ इंडिया

15 अगस्त, 1970 ई.

रसूल हाशमी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने प्यारे मोइनुददीन चिश्ति अजमेरी को अपना नाएब बनाकर अताए रसूल का खताब से नवाज कर हिन्दूस्तान की सरजमीन पर जाने का हुक्म सादीर फरमाया, जाहरी व बातनी रमूज से सरफराज किया। हिन्दुस्तान की जमीन जहाँ कुफ्र ही कुफ्र, जुल्मत ही जुल्मत ऐसी जगह में आकर इस्लाम की सदाकत के परचम को बुलन्द करना ये अताए रसूल की ताकत थी, गोया इस अता में सबकुछ अता कर दिया। कुफ्र के दरम्यान अपनी वलायत का सिक्का ता कयामत तक के लिए बैठा दिया। ऐ जाहरी बादशाह तेरी हुकूमत चन्द दिनों के लिए है। मेरी हुकूमत मेरे रसूल को अता किरदह है न कभी खत्म हुई है, न कभी खत्म होगी। प्यारे रसूल्लह सल्लल्लाह व अलैहे वसल्लम की बारगाह से कुरान, नमाज, काबा की अजमत, बहत्तर (72) शाहीदाने बावफा की ताजियात के गम में ताजिया शरीफ का तोहफा लेकर हिन्दुस्तान आया हूँ। ख्वाजा गरीब नवाज ने अपने अकिदा का इजहार यूँ फरमाया–

"शाह अस्त हुसैन, बादशाह अस्त हुसैन,

दिं अस्त हुसैन, दिं पनाह अस्त हुसैन,

सरदाद न दाद दस्त दर दस्त यजिद,

हक्का के बिना लाइलाहा अस्त हुसैन।''

(ख्वाज गरीब नवाज)

गदाए अशरफ

सूफि मो. सईद मजहर अशाफी

अल्लामा एकबाल आशिके इमाम हुसैन अलैहीस्सलम

शाएर मशरीक अल्लामा एकबाल फरवहर शाही फरवहर खानखाह को मुसलमानों के लिए मजर और इस्लाम के लिए नुकसानदेह समझते थे। मुसलमानों को मसलक शब्बिरी की दावत देते हैं–

''निकलकर ख.नकाहों से अदा कर रस्म शब्बिरी,

के फिक्र खानकाही है फकत अनदोह व दिलगीरी।''

एक और मकाम पर ये फरमाते हैं–

''फिक्र आरिया मर गई बद्र व हसनैन,

फिक्र गुरबाँ बांग तकबीर हुसैन।''

यानी हकिकी फिक्र इस्लामी मारका बद्र व हसनैन और तकबीर इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम है।

अल्लामा एकबाल इस तसौउफ से नफरत रखते थे जो मुसलमान की सुजाअत से दौड़ अमन से बेगाना और जद व जेहद से अलायेहदा करके तर्क दुनिया के तरफ माएल करें। वह मुसलमानों को यह मशवरा देते हैं कि उजलत नशीनी की जिन्दगी छोड़कर नक्श कदम इमाम हुसैन पर चलें जो सिर्फ फिदाकारी ऐशारी और कुर्बानी से हासिल हो सकती है।

अल्लामा एकबाल पैयामे मशरीक में इरशाद फरमाते हैं–

"तिर व बना व खंजर व शशीरम आरजूस्त,

बामन मियां के मसलक शबिरम आरजूस्त।"

यानी तीर व नेजा व खंजर और तलवार मेरी ख्वाहीशात है। ऐ नाम व नेहाद मुसलमान मेरे साथ मत चल, क्योंकि मेरी आरजू इमाम हुसैन की तरह हक पर कुर्बानी करना है।

अल्लामा एकबाल ने फरमाया–

"जिन्दा हक अज खून शब्बिरी अस्त,

बातील आखिर दाग हसरत मेरी अस्त,

मेहर हक दरखान व खुन गलतिदह अस्त,

पस बनाए लाइलाहा गरविदा अस्त।"

पैगाम इमाम हुसैन की शहादत से जिन्दा है जिसने बातिल को हमेशा के लिए मायूस और नाबुद कर दिया और इसी हक को बचाने के लिए इमाम हुसैन और उनके जाँवाज अपने खून में नहाने और इस तरह इस्लाम की मजीद बुनियाद डाली और उसे हमेशा के लिए बाकी रखा।

अल्लामा एकबाल रमूज बेखुदी में फरमाते हैं–

"आल इमाम आशिकाँ बुद बकौल,

सरो आजादी जबिस्तान रसूल,

अल्लाह-अल्लाह हाय बिस्मिल्लाह यदर

मानी जबह अजिम आमद पर।"

यानी इमाम हुसैन हकिकी आशिकों के इमाम और हजरत फातमा के बेटे हैं। आप रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सरू हैं। दूसरे शेर में हजरत अली के इस जूमले का के

बिस्मिल्लाह की 'बे' का लफज जो खुलासा कुरान है। बाले जिबरील में अल्लामा फरमाते हैं–

''गरीब व सादा व रंगीन है दास्ताने हरम,
नाहयत उसकी हुसैन इबतदाए इसमाईल।''

हजरत इमाम हुसैन ने उसकी हुरमत को अपनी जान व माल की कुर्बानी देकर बाम उरूज पर पहुँचाया और कयामत के लिए मुस्तहकम बना दिया।

अल्लामा फरमाते हैं–

''सिदके खलिल भी है इश्क हुसैन भी है इश्क,
मोआरका वजूद में बद्रों हसनैन भी है इश्क

रमूज बेखुदी में वाक्या कर्बला की तफसीर करते फरमाते हैं–

''चुँ खिलाफत रिश्ता अज कुरान किस्त,
हुरयत रा जहर अन्दर काम रेख्त,
खासित आल सर जलवह खैशरामय,
चुह सहाबा किबला बाराँ दर खदम,
बर जमीन कर्बला बारीदवाँ रफत
लाला दर व प्रान्द बाकरीदों रफत
ता कयामत कताअ अस्तबदाद किर्द,
मूह खून अर चमन एजाद किर्द।''

यानी खिलाफत ने कुरान मजीद से अपना ताअल्लक खत्म कर लिया और खिलाफे इस्लामी और कुरानी वसूल को छोड़कर मलूकियत में तब्दील हो गयी। और आजादी को जहर दीद या गयात तब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नवासा हजरत अली

का बेटा इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम इस जुल्माना रवैये को बर्दाश्त न कर सके और रहमतुल्लील आलमीन का नवासा अब्र रहमत बनकर बढ़े और कर्बला की जमीन पर खून की ऐसी बारिश की कर्बला के दश्त को शहीदों के गुलिस्ताँ में तब्दील कर दिया ओर कयामत तक जुल्म व सितम का खात्मा करके आजादी के गुलशन में जिन्दगी डाली, मैदाने कर्बला में इमाम हुसैन अलैहीस्सलाम अल्लाह के नाम के साथ-साथ उम्मत इस्लामी को नजात का अनवान भी रकम कर रहे थे।

(अखबार इनकलाब, 10 नवम्बर 2013 ई.)

हिन्दुस्तान में ख्वाजा गरीब नवाज की दाययाना फतुहात और उसके हमा गैर असरात

इस्लाम की अशाअत व तबलीग का ताअल्लूक एखलाक व किरदार से रहा है। एक मुगालता बड़ी कुवत से दुश्मन अनासीर ने ये दिया कि इस्लाम की अशाअत तलवार से हुई शम्शीर व सनासे से हुई। ये मुगालता कुछ आज तक की सोच नहीं बल्कि सदियों से इस्लाम के सिलखां पर बन्द बांधने की कोशिश करने वाले सहयुनी अनासर और यहूदी जमाने से रेवाज दिया। हाँ ये जरूर है कि एक सदी से भी कम अर्से में मतारूफ होने वाले मिडिया ने इसे अज सर नौ उछाला और प्रेस की कुवत के मनफी इस्तेमाल से आन की आन में पूरी दुनिया में ये फिक्र कर दी। हालांकि इस बाबत वह एक भी दलील पेश करने से कासिर रहे हैं। मिडिया के इस तर्ज अमल से बहुत से जेहनों अयहाम में मुबतला कर दिया। ऐसे जेहनों की तरतीब के लिए सूफियाए कराम बिलखसूस हिन्दुस्तान में इस्लाम के इश्आती कारवां के आजिम सालार ख्वाजा मोइनुददीन हसन चिश्ति संजरी अजमेरी की जात आयडियल की हैसियत रखती है। स्पेन

जहाँ मुसलमानों ने 781 सालों तक हुकूमत की वहाँ जब मुसलमानों का एकतदार जवाल पजीर हुआ तो उसी के हाथ दावती नेजाम का भी खातमा हो गया। और मुसलमानों को चुन-चुन कर खत्म कर दिया गया। ऐसा क्यों हुआ इसलिए कि वहाँ मुसलमानों का वजूद मुस्लिम एकतदार के सहारा था। अरबाब हुकूमत इसलाम की राह से हटे तो जवाल से दो चार हुए। अमिरियत का नतीजा बाला आखिर एकतदार का मिट जाता है। लेकिन हिन्दुस्तान में मुसलमानों का वजूद आए दिन सूफिया बिलखसूस सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा गरीब् नवाज की काविशों से हुआ। इसी वजहों से सदियों से फैला हुआ मुस्लिम एकतदार जब मिटा तो जरूर मिट गयी लेकिन मुसलमान बाकी रहे, इस्लाम बाकी रहा। अल्लाह का वली जहाँ मोकिम होता है जमीन मोसरबखर हो ज़ाती है। उसकी जात दिलों में बस जाती है इसका मिशन आगे ही बढ़ता ही रहता है। ख्वाजा गरीब नवाज ने अपने अखलाक व किरदार इस्तकामत व करामत और जहद मुसलसल से जिस गुलिस्तान की आबयारी की थी वह आज भी शादाँ है। सदिया गूजर गयी। अंग्रेज का एकतदार भी हिन्दुस्तान से गरीब नवाज के रूहानी एकतदार को न छिन सका। 30 करोड़ से ज्यादा मुसलमान इस मुल्क में बसते हैं और आजादी के साथ अपने मजहब पर कायम है। ये इसी अब्र बारन्दह की बरकत से जिसे हिन्द की बादशाहत अता की गई और जिससे इमान की फसल आज भी सर सब्ज व शादाब है। (अखबार अवामी टाइम्स 10 मई, 2013 ई.)

"ऐ सिब्ते नबी जाने अली आशिके बारी
दुनिया से मिटेगी न कभी ताजियादारी।"

मनकबत

या हुसैन इब्न अली क्या शान तेरी शान है
दोनों आलम की खुदाई आप पे कुर्बान है,
दिन हक को आपके सजदे से मिल पाई बका
उम्मते आसी पे हर दम आप का एहसान है
सर कटा कर आपने जिन्दा किया इस्लाम को
आप पे कुर्बान मेरा दिल मेरी जान है,
मुस्तफा की आल अल्लिफ लाम से जाहीर हुआ
जालेकल किताब बिला शुभा ये कुरान है
खून के कतरे से कर्बल कह रही है आज तक
हुब्बे अहले बैत की ये आखरी पहचान है
या हुसैन इब्न अली जिस शख्स ने जिस दम कहा,
हर बला एक आन मे हर दास्ताँ आसान है,
हो अता सदका दिले मजहर को अपनी आल का
आप की उल्फत में दम निकले यही अरमान है।

—सूफी सईद मजहर अशरफी

